

HUSNE AKHLAQ (HINDI)

हुस्ने अख़्लाक़ के फ़ज़ाइल पर
मुश्तमिल 200 मुस्तनद अहादीस का मजमूआ



مَكَارِمُ الْأَخْلَاقِ

तर्जमा बनाम

हुस्ने अख़्लाक़

-: मुअल्लिफ़ :-

हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू क़ासिम सुलैमान बिन अहमद त़बरानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي

(अल मुतवफ़्फ़ा 360 हि.)



اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज : शैखे तरीकत, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा
मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी रजवी رَمَتْ بِرِكَائِلِهِمُ الْعَالِيَةِ

दीनी किताब या इस्लामी सबक पढ़ने से पहले जैल में दी हुई दुआ पढ़
लीजिये اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَاَنْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ

तरजमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो हिकमत के दरवाजे खोल दे और हम पर
अपनी रहमत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अज़मत और बुजुर्गी वाले। (مَشْتَرَفٌ ج ١ ص ٤٠٠ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आखिर एक एक बार दुरूद शरीफ पढ़ लीजिये।

तालिबे ग़मे मदीना
व बकोअ
व मरिफ़रत



13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ हसरत

فَرَمَانُهُ مُسْتَفَا : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : सब से ज़ियादा हसरत क़ियामत
के दिन उस को होगी जिसे दुनिया में इल्म हासिल करने का मौक़अ मिला मगर
उस ने हासिल न किया और उस शख्स को होगी जिस ने इल्म हासिल किया
और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़अ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी
उस इल्म पर अमल न किया)। (تاريخ دمشق لابن عساکر ج ٥١ ص ١٣٨ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की तबाअत में नुमायां ख़राबी हो या सफ़हात कम हों या बाइन्डिंग में
आगे पीछे हो गए हों तो मक्तबतुल मदीना से रुजूअ फ़रमाइये।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी इन्डिया)

येह रिसाला "हुस्ने अख़्लाक़"

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी इन्डिया) ने उर्दू ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को हिन्दी रस्मुल ख़त में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लती पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़े मक्तूब, Email या SMS) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

हुरूफ़ की पहचान

फ = ف	प = پ	भ = ب	ब = ب	अ = ا
स = س	ठ = ث	ट = ت	थ = ث	त = ت
ह = ح	छ = ح	च = ج	झ = ج	ज = ج
ढ = د	ड = د	ध = د	द = د	ख़ = خ
ज़ = ز	ढ = د	ड़ = د	र = ر	ज़ = ز
ज़ = ج	स = س	श = ش	स = س	ज़ = ز
फ़ = ف	ग़ = غ	अ = ع	ज़ = ج	त = ت
घ = غ	ग = ج	ख = خ	क = ك	क़ = ق
ह = ه	व = و	न = ن	म = م	ल = ل
ई = ع	इ = ا	ऐ = ا	ए = ا	य = ي

राबिता : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी इन्डिया)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,

तीन दरवाज़ा, अहमदआबाद -1, गुजरात

MO. 9898732611 • Email : hind.printing92@gmail.com

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी इन्डिया)

हुस्ने अख़लाक़ के फ़ज़ाइल
पर मुश्तमिल 200 मुस्तनद अहादीस का मजमूआ

مَكَارِمُ الْأَخْلَاقِ

तर्जमा बनाम

हुस्ने अख़लाक़

-: मुअल्लिफ़ :-

हज़रते सय्यिदुना इमाम

अबू कासिम सुलैमान बिन अहमद तबरानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي

(अल मुतवफ़्फ़ा 360 हि.)

-: पेशकश :-

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी इन्डिया)

-: नाशिर :-

मक्ताबतुल मदीना

الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ وَعَلَى الْكَوَاكِبِ يَا حَبِيبَ اللَّهِ

नाम किताब : مَكَارِمُ الْأَخْلَاقِ

तर्जमा बनाम : हुस्ने अख़लाक़

मुअल्लिफ़ : हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू क़ासिम सुलैमान
बिन अहमद तबरानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي

मुताज्जिमीन : मदनी इलमा (शो'बए तराजिमे कुतुब)

सिने तबाअत : सफ़रुल मुजफ़फ़र 1445 हि. ब मुताबिक् सितम्बर 2023 ई.

तस्दीक़ नामा

तारीख़ : 6 जुल हिज्जतिल हराम, 1430 हि. हवाला : 165

الحمد لله رب العالمين والصلاة والسلام على سيد المرسلين وعلى اله واصحابه اجمعين

तस्दीक़ की जाती है कि किताब “مَكَارِمُ الْأَخْلَاقِ” के

उर्दू तर्जमे

“हुस्ने अख़लाक़”

(मत्बूआ : मक्तबतुल मदीना) पर मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल की जानिब से नज़रे सानी की कोशिश की गई है। मजलिस ने इसे मतालिब व मफ़ाहिम के ए'तिबार से मक्दूर भर मुलाहज़ा कर लिया है अलबत्ता कम्पोज़िंग या किताबत की ग़लतियों का ज़िम्मा मजलिस पर नहीं।

मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल
(दा'वते इस्लामी)

24-11-2009

मदनी इल्लिजा : किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं।

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी इन्डिया)

मज़ामीन	सफ़ह	मज़ामीन	सफ़ह
इस किताब को पढ़ने की नियतें	3	मुसलमानों की ख़ैर ख़ाही की फ़ज़ीलत	36
अल मदीनतुल इल्मिय्या का तअरुफ़	4	दिल की पाकीज़गी और मुसलमानों के	37
पहले इसे पढ़ लीजिये	6	कीने से बचने की फ़ज़ीलत	
तअरुफ़े मुसन्निफ़	10	लोगों में सुल्ह कराने की फ़ज़ीलत	40
तिलावते कुरआने मजीद, जिक्कुल्लाह	14	अदाएगिये हुक्क की फ़ज़ीलत	41
की कसरत, ज़बान के कुफ़्ले मदीना,		मज़लूम की मदद करने की फ़ज़ीलत	41
मसाकीन से महब्वत और इन की हम		ज़ालिम को जुल्म से रोकने का बयान	42
नशीनी के फ़ज़ाइल		नादान को रोकने का बयान	42
हुस्ने अख़लाक़ की फ़ज़ीलत	15	मुसलमानों की मदद और इन की ज़रूरत	43
नर्म मिज़ाजी, खुश अख़लाकी और	19	पूरी करने की फ़ज़ीलत	
अज़िज़ी की फ़ज़ीलत		किसी की परेशानी दूर करने की फ़ज़ीलत	47
लोगों से ख़न्दा पेशानी से मिलने की फ़ज़ीलत	20	कमज़ोरों की कफ़ालत करने की फ़ज़ीलत	49
मुसलमान भाई के लिये मुस्कुराने की फ़ज़ीलत	21	यतीमों की कफ़ालत करने की फ़ज़ीलत	51
नर्मी और बुर्दबारी की फ़ज़ीलत	22	लावारिस बच्चों की तर्बिय्यत और इन के	55
सब्र व सखावत की फ़ज़ीलत	24	बड़े होने तक इन पर खर्च करने की फ़ज़ीलत	
गुस्से के वक़्त खुद पर काबू पाने की फ़ज़ीलत	26	हुस्ने सुलूक की फ़ज़ीलत	55
रहम और नर्म दिली की फ़ज़ीलत	27	अच्छे आ'माल करने की फ़ज़ीलत	59
गुस्सा पी जाने की फ़ज़ीलत	30	मुसलमान पर जुल्म करने की मज़म्मत	60
लोगों से दर गुज़र करने की फ़ज़ीलत	32	मुसलमान भाई की जाइज़ सिफ़ारिश	

मजामीन	सफ़हा	मजामीन	सफ़हा
करने की फ़ज़ीलत	62	उलमा के लिये मजलिस कुशादा करने की फ़ज़ीलत	69
मुसलमान की इज़्ज़त का तहफ़फ़ुज़ और इस की मदद करने की फ़ज़ीलत	64	मुसलमान भाई को तक्या पेश करने की फ़ज़ीलत	70
लोगों से महबबत करने की फ़ज़ीलत	66	खाना खिलाने की फ़ज़ीलत	71
राहे खुदा में मदद करने की फ़ज़ीलत	66	मुसलमान भाई को लिबास पहनाने की फ़ज़ीलत	86
हाज़ी की मदद करने और रोज़ा इफ़्तार कराने की फ़ज़ीलत	67	हमसाए के हुकूक का बयान	87
छोटों पर शफ़क़त, बड़ों की इज़्ज़त और उलमा का एहतिराम करने की फ़ज़ीलत	68	माख़ज़ो मराजेअ	91
		❁.....❁.....❁	



﴿...नेकियों का ज़खीरा...﴾

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

अल्लाह صَلَّ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ व रसूलِ صَلَّ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की खुशनुदी के हुसूल और बा किरदार मुसलमान बनने के लिये “दा 'वते इस्लामी” के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना से “मदनी इन्आमात” नामी रिसाला हासिल कर के इस के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने की कोशिश कीजिये । और अपने अपने शहरों में होने वाले दा 'वते इस्लामी के हफ़तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ में पाबन्दिये वक्त के साथ शिक़त फ़रमा कर ख़ूब ख़ूब सुन्नतों की बहारें लूटिये । दा 'वते इस्लामी के सुन्नतें सीखने सिखाने के लिये बे शुमार मदनी काफ़िले शहर ब शहर, गाउं ब गाउं सफ़र करते रहते हैं आप भी सुन्नतों भरा सफ़र इख़्तियार फ़रमा कर अपनी आख़िरत के लिये “नेकियों का ज़खीरा” इक़तल करे । اِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ आप अपनी ज़िन्दगी में हैरत अंगेज़ तौर पर “मदनी इनक़िलाब ” बरपा होता देखेंगे ।

أَلْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ط بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط

“अब्बै अख़लाक़ अपनाओ” के 14 हुरूफ़ की
निस्बत से इस किताब को पढ़ने की “14 निय्यतें”

نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِنْ عَمَلِهِ : صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ
या'नी मुसलमान की निय्यत उस के अमल से बेहतर है।”

(المعجم الكبير للطبرانی، الحديث: ٥٩٤٢، ج: ٦، ص: ١٨٥)

दो मदनी फूल :

﴿1﴾ बिगैर अच्छी निय्यत के किसी भी अमले खैर का सवाब नहीं मिलता ।

﴿2﴾ जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा ।

﴿1﴾ हर बार हम्द व ﴿2﴾ सलात और ﴿3﴾ तअव्वुज व
﴿4﴾ तस्मिया से आगाज करूंगा (इसी सफ़हा पर ऊपर दी हुई दो
अरबी इबारात पढ़ लेने से चारों निय्यतों पर अमल हो जाएगा)।

﴿5﴾ कुरआनी आयात और ﴿6﴾ अहादीसे मुबारका की जियारत करूंगा

﴿7﴾ रिज़ाए इलाही के लिये इस किताब का अव्वल ता आख़िर मुतालआ

करूंगा । ﴿8﴾ हत्तल वस्अ इस का बा वुजू और क़िब्ला रू मुतालआ

करूंगा । ﴿9﴾ जहां जहां “अब्बाह” का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ

और ﴿10﴾ जहां जहां “सरकार” का इस्मे मुबारक आएगा वहां

पढ़ूंगा । ﴿11﴾ (अपने ज़ाती नुस्खे पर) इन्दज़रूरत खास

खास मक़ामात पर अन्डर लाइन करूंगा ﴿12﴾ दूसरों को यह किताब पढ़ने

की तरगीब दिलाऊंगा । ﴿13﴾ इस हदीसे पाक “تَهَادُوا تَحَابُّوا” एक दूसरे

को तोहफ़ा दो आपस में महब्वत बढ़ेगी । (الحديث: ٤٠٧، ج: ٢، ص: ١٧٣١)

पर अमल की निय्यत से (एक या हस्बे तौफ़ीक़) यह किताब ख़रीद कर

दूसरों को तोहफ़तन दूंगा । ﴿14﴾ किताबत वगैरा में शरई ग़लती मिली तो

नाशरीन को तहरीरी तौर पर मुत्तलअ करूंगा ।

(मुसनिफ़ या नाशरीन वगैरा को किताबों की अग़लात सिर्फ़ ज़बानी बताना खास मुफ़ेद नहीं होता)

أَلْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط

अल मदीनतुल इल्मिया

अज़ : शौखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, आशिक़े आ'ला हज़रत,
बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरि रज़वी ज़ियाई الْعَالِيَةِ دَامَتْ بَرَكَاتُهُمْ

أَلْحَمْدُ لِلَّهِ عَلَى إِحْسَانِهِ وَبِفَضْلِ رَسُولِهِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

तब्तीगे कुरआनो सुन्नत की ग़ैर सियासी तहरीक “दा 'वते इस्लामी” नेकी की दा'वत, एहयाए सुन्नत और इशाअते इल्मे शरीअत को आ़म करने का अज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब हुस्नो ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये मुतअद्दिद मजालिस का क़ियाम अमल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस “अल मदीनतुल इल्मिया” भी है जो दा 'वते इस्लामी के उलमा व मुफ़्तयाने किराम كَثْرَتُهُمُ اللَّهُ تَعَالَى पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इल्मी, तहक़ीकी और इशाअती काम का बीड़ा उठाया है। इस के मुन्दरिजए ज़ैल छे शो 'बे हैं :

- | | |
|-----------------------------|-------------------------|
| ﴿1﴾ शो'बए कुतुबे आ'ला हज़रत | ﴿2﴾ शो'बए दर्सी कुतुब |
| ﴿3﴾ शो'बए इस्लाही कुतुब | ﴿4﴾ शो'बए तराजिमे कुतुब |
| ﴿5﴾ शो'बए तफ़्तीशे कुतुब | ﴿6﴾ शो'बए तख़रीज |

“अल मदीनतुल इल्मिया” की अक्वलीन तरजीह सरकारे आ’ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अज़ीमुल बरकत, अज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, हामिये सुन्नत, माहिये बिदअत, आलिमे शरीअत, पीरे तरीक़त, बाइसे ख़ैरो बरकत, हज़रते अल्लामा मौलाना अलहाज अल हाफ़िज़ अल कारी शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की गिरां मायह तसानीफ़ को अंसरे हाज़िर के तकाज़ों के मुताबिक़ हत्तल वस्अ सहल उस्तूब में पेश करना है। तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इल्मी, तहकीकी और इशाअती मदनी काम में हर मुमकिन तआवुन फ़रमाएं और मजलिस की तरफ़ से शाएअ होने वाली कुतुब का खुद भी मुतालआ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरगीब दिलाएं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ “दा’वते इस्लामी” की तमाम मजालिस ब शुमूल “अल मदीनतुल इल्मिया” को दिन ग्यारहवीं और रात बारहवीं तरक्की अता फ़रमाए और हमारे हर अमले ख़ैर को जेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर दोनों जहां की भलाई का सबब बनाए। हमें जेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बकीअ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में जगह नसीब फ़रमाए।

اٰمِيْنَ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ



रमज़ानुल मुबारक 1425 हि.

पहले इसे पढ़ लीजिये !

एक शख्स ने हुजूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से हुस्ने अख़्लाक के मुतअल्लिक सुवाल किया तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने येह आयते मुबारका तिलावत फ़रमाई :

حُذِرَ الْعَفْوَ وَأُمِرُ بِالْعُرْفِ ۚ تَرْجَمَ عَ كَنْزِ الْجُلِّ إِمَانٍ : ۞
 وَأَعْرِضْ عَنِ الْجُهْلِينَ ۞
 महबूब मुआफ़ करना इख़्तियार करो और भलाई का हुक्म दो और जाहिलों से मुंह फेर लो ।

(ب ۹، الاعراف: ۱۹۹)

फिर इरशाद फ़रमाया : “हुस्ने ख़ुल्क येह है कि तुम क़तए तअल्लुक करने वाले से सिलए रेहमी करो, जो तुम्हें महरूम करे उसे अ़ता करो और जो तुम पर जुल्म करे उसे मुआफ़ कर दो ।”(1)

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मुबारक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ فرमाते हैं कि “ख़न्दा पेशानी से मुलाक़ात करने, ख़ूब भलाई करने और किसी को तक्लीफ़ न देने का नाम हुस्ने अख़्लाक है ।”(2)

प्यारे और मोहतरम इस्लामी भाइयो ! हमारे प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की तशरीफ़ आवरी का एक और मक्सद येह भी है कि लोगों के अख़्लाक व मुआमलात को दुरुस्त करें । उन के अन्दर से बुरे अख़्लाक की जड़ें उखाड़ें और

①.....احياء علوم الدين، كتاب رياضة النفس.....الخ، بيان فضيلة حسن الخلق.....الخ،

ج ۳، ص ۶۱

②.....سنن الترمذی، كتاب البر والصلة، باب ماجاء فی حسن الخلق، الحديث: ۲۰۱۲،

ج ۳، ص ۴۰۴

इन की जगह बेहतरीन अख़्लाक पैदा करें। चुनान्चे, आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने अपने क़ौल व अमल से तमाम अच्छे अख़्लाक की फ़ेहरिस्त मुरत्तब फ़रमाई और पूरी ज़िन्दगी और ज़िन्दगी के तमाम शो'बों पर इसे नाफ़िज़ किया और हर तरह के हालात में इन पर कारबन्द रहने की हिदायत की।

हुस्ने अख़्लाक की ने'मत सिर्फ़ सआदत मन्दों का हिस्सा है और **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ का खासुल खास इन्आम है और हुस्ने अख़्लाक में हुस्न ही हुस्न है जब कि बद् अख़्लाकी में कराहिय्यत ही कराहिय्यत है। किसी ने क्या ख़ूब कहा है :

है फ़लाहो कामरानी नर्मी व आसानी में
हर बना काम बिगड़ जाता है नादानी में

जेरे नज़र रिसाला "हुस्ने अख़्लाक" दुन्याए इस्लाम के अज़ीम मुहद्दिस हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू क़ासिम सुलैमान बिन अहमद तबरानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي का शाहकार तालीफ "مُكَارِمُ الْأَخْلَاقِ" का तर्जमा है। जिस में सय्यिदुना इमाम तबरानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي ने अख़्लाक के मुख़्तलिफ़ शो'बों के मुतअल्लिक अहादीसे मुबारका जम्अ फ़रमाई हैं। उम्मीदे वासिक है कि येह रिसाला शबो रोज़ इनफ़िरादी कोशिश में मसरूफ़ रहने वाले इस्लामी भाइयों के लिये बेहद मुफ़ीद साबित होगा إِنَّ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ। लिहाज़ा हुस्ने अख़्लाक अपनाने और **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की इताअत व फ़रमां बरदारी पर इस्तिक़मत पाने और "अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश" का मुक़द्दस ज़ब्बा उजागर करने के लिये खुद भी इस रिसाले का मुतालअ कीजिये और हस्बे इस्तिताअत

मक्तबतुल मदीना से हदिय्यतन हासिल कर के दूसरों को बतौर तोहफ़ा पेश कीजिये। इस तर्जमे में जो भी ख़ूबियां हैं वोह यकीनन **اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى عَلِيٍّ وَآلِهِ وَاسَلِّمْ** की अताओं, औलियाए किराम **رَحْمَتُهُمُ اللهُ السَّلَام** की इनायतों और शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी रज़वी** **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه** की पुर खुलूस दुआओं का नतीजा है और जो ख़ामियां हैं इन में हमारी कोताह फ़हमी का दख़ल है।

तर्जमा करते हुवे दर्जे ज़ैल उमूर का खुसूसी तौर पर ख़याल रखा गया है :

❁.....सलीस और बा मुहावरा तर्जमा किया गया है ताकि कम पढ़े लिखे इस्लामी भाई भी समझ सकें।

❁.....आयाते मुबारका का तर्जमा आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, शाह इमाम **अहमद रज़ा ख़ान** **عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن** के तर्जमए कुरआन “**कन्ज़ुल ईमान**” से लिया गया है।

❁.....आयाते मुबारका के हवाले नीज़ हत्तल मक़दूर अहादीस व अक्वाल वगैरा की तख़ारीज का भी एहतिमाम किया गया है।

❁.....बा'ज़ मक़ामात पर मुफ़ीद व ज़रूरी हवाशी का इलतिज़ाम किया गया है।

❁.....मुश्किल अल्फ़ाज़ पर ए'राब लगाने की सई भी की गई है।

❁.....मुश्किल अल्फ़ाज़ के मअ़ानी हिलालैन या'नी ब्रेकेट (.....) में लिखने का एहतिमाम किया गया है।

❁.....अलामाते तरकीम (रुमूज़े अवकाफ़) का भी ख़याल रखा गया है।

अल्लाह ﷻ की बारगाह में दुआ है कि हमें “अपनी और सारी दुनिया के लोगों की इस्लाह की कोशिश” करने के लिये मदनी इन्आमात पर अमल और मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और दा'वते इस्लामी की तमाम मजालिस ब शुमूल मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या को दिन पच्चीसवीं रात छब्बीसवीं तरक्की अता फ़रमाए ।

أَمِينِ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

शो 'बए तराजिमे कुतुब

(मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या)

फ़जाइले कुरआने करीम

फ़रमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

“येह कुरआने मजीद अल्लाह ﷻ की तरफ़ से ज़ियाफ़त है तो तुम अपनी इस्तिताअत के मुताबिक़ उस की ज़ियाफ़त कबूल करो । बेशक येह कुरआने मजीद, अल्लाह ﷻ की मज़बूत रस्सी, नूरे मुबीन, नफ़्थ बख़्शा शिफ़ा, जो इसे इख़्तियार करता है उस के लिये ढाल और जो इस पर अमल करे उस के लिये नजात है । येह हक़ से नहीं फिरता कि इस के इज़ाले के लिये थकना पड़े और येह टेढ़ी राह नहीं कि इसे सीधा करना पड़े । इस के फ़वाइद ख़त्म नहीं होते और कसरते तिलावत से पुराना नहीं होता (या'नी अपनी हालत पर काइम रहता है) । तो तुम इस की तिलावत किया करो अल्लाह ﷻ तुम्हें हर हर्फ़ की तिलावत पर दस नेकियां अता फ़रमाएगा । मैं नहीं कहता कि “الم” एक हर्फ़ है बल्कि “الف” एक हर्फ़ “لام” एक हर्फ़ और “ميم” एक हर्फ़ है ।” (المستدرک، الحدیث: ٢٠٨٤، ج ٢، ص ٢٥٦)

तझारुफ़े मुशन्नफ़

नाम व नसब :

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ का नामे नामी इस्मे गिरामी सुलैमान बिन अहमद बिन अय्यूब मुतीर लख़मी त़बरानी है। कुन्यत अबू कासिम है और इमाम त़बरानी के नाम से मशहूर हैं।

बिलादते बा सआदत :

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ सफ़रुल मुजफ़्फ़र 260 हि. में त़बरिया में पैदा हुवे।

इल्मी जिन्दगी :

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने बचपन ही से इल्म हासिल करना शुरू फ़रमा दिया था। चुनान्चे, त़बरिया में हज़रते सय्यिदुना अहमद बिन मसऊद मक़दसी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى से अहदीस की समाअत की, उस वक़्त उम्र शरीफ़ 13 साल थी। फिर मुल्के शाम मुन्तक़िल हो गए जहां आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने इल्मे हदीस के माहिर व निक़्ाद मुहद्दिसीन से समाअते हदीस की, फिर 280 हि. में मिस्र की जानिब सफ़र इख़्तियार फ़रमाया और 282 हि. में यमन। 283 हि. में मदीनए मुनव्वरा رَاكَمَا اللهُ شَرْفًا وَتَعْظِيمًا की जानिब सफ़र किया। फिर मक्कए मुकर्रमा رَاكَمَا اللهُ شَرْفًا وَتَعْظِيمًا से होते हुवे दोबारा यमन तशरीफ़ ले आए। 285 हि. में मिस्र लौट आए और 287 हि. में इराक़ का सफ़र फ़रमाया। इन तमाम सफ़रों के दौरान कुछ वक़्त अइम्मए हदीस से हदीस की समाअत का शरफ़ हासिल किया फिर फ़ारस मुन्तक़िल हो गए और ता दमे वफ़ात वहीं क़ियाम पज़ीर रहे।

असातिज़ए किराम :

हज़रते सय्यिदुना इमाम ज़हबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي “तज़किरतुल हुप्फ़ाज़” में फ़रमाते हैं कि “हज़रते सय्यिदुना सुलैमान बिन अहमद त़बरानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي के असातिज़ा की ता’दाद एक हज़ार से जाइद है।” हज़रते सय्यिदुना इमाम त़बरानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي के शागिर्दे रशीद हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू नईम अस्फ़हानी قَدَسَ سِرُّهُ الْتُورَانِي “हिल्यतुल औलिया” में फ़रमाते हैं कि “आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने बे शुमार अकाबिर उ़लमा से अहादीस रिवायत की हैं। चन्द मशहूर शयूख़ के अस्माए गिरामी येह हैं :

- (1).....हज़रते सय्यिदुना अली बिन अब्दुल अज़ीज़ बग़वी
- (2).....हज़रते सय्यिदुना अबू मुस्लिम कशी
- (3).....हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह हज़रमी
- (4).....हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अहमद बिन हम्बल
- (5).....हज़रते सय्यिदुना इस्हाक़ बिन इब्राहीम दबेरी
- (6).....हज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ बिन या’कूब काज़ी और
- (7).....हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन उस्मान बिन अबी शैबा رَحْمَتُهُمُ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ

तलामिज़ा :

बे शुमार तिशनगाने इल्म ने आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के बहरे इल्म से अपनी प्यास बुझाई जिन में से चन्द के अस्माए गिरामी येह हैं : (1).....हज़रते सय्यिदुना हाफ़िज़ अहमद बिन मूसा बिन मरदविया (2).....हज़रते सय्यिदुना हाफ़िज़ मुहम्मद बिन अहमद बिन अहमद जारवदी (3).....हज़रते सय्यिदुना हाफ़िज़ मुहम्मद बिन इस्हाक़ बिन मुहम्मद बिन यहूया अस्बहानी और (4).....हज़रते सय्यिदुना हाफ़िज़ मुहम्मद बिन अबू अली अहमद बिन अब्दुर्रहमान

हम्ज़ानी ज़क़वानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ । नीज़ आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के बा'ज़ शयूख़ ने भी आप से रिवायात ली हैं ।

तस्नीफ़ व तालीफ़ :

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने कसीर कुतुब तस्नीफ़ फ़रमाई हैं जिन में से चन्द के नाम दर्जे ज़ैल हैं : (1)..... **الْمُعْجَمُ الْكَبِيرُ**..... (1)

(2)..... **الْمُعْجَمُ الْأَوْسَطُ**..... (3).....

(4)..... (ज़ेरे नज़र रिसाला) **مَكَارِمُ الْأَخْلَاقِ**..... (5).....

(6)..... **كِتَابُ الدُّعَاءِ**..... (7).....

ता'रीफ़ी कलिमात :

हज़रते सय्यिदुना इमाम समआनी **قُدِّسَ سِرُّهُ التَّوَرَانِي** "अल अन्साब" में फ़रमाते हैं कि "हज़रते सय्यिदुना इमाम त़बरानी अपने ज़माने के हाफ़िज़ुल हदीस थे । इल्मे हदीस के हुसूल के लिये मुख़लिफ़ मुमालिक का सफ़र इख़्तियार फ़रमाया और बेशुमार शयूख़ से मुलाक़ात की और हुफ़फ़ज़े हदीस से मुज़ाकरा किया । फिर उम्र के आख़िरी अय्याम में अस्बहान में सुकूनत इख़्तियार फ़रमाई और कसीर कुतुब तस्नीफ़ फ़रमाई ।"

हज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने असाकिर **رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** "तारीख़े दिमशक़" में फ़रमाते हैं कि "हज़रते सय्यिदुना इमाम त़बरानी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي** कसीर अहादीस हिफ़ज़ करने और अहादीस के हुसूल के लिये सफ़र करने वालों में से एक हैं ।"

हज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने इम्माद **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْجَوَاد** "शज़रातुज्ज़हब" में फ़रमाते हैं कि "हज़रते सय्यिदुना इमाम त़बरानी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي** क़ाबिले ए'तिमाद और सच्चे मुहद्दिस थे । क़वी हाफ़िज़े के मालिक और अलल व रिजाले हदीस और अबवाब की कामिल बसीरत रखने वाले थे ।

विसाल :

इल्मो अमल का येह हसीन पैकर इल्म के मोती लूटाते और इल्म के प्यासों को सैराब करते हुवे माहे जुल का'दा 360 हि. में दारे फ़ानी से दारे बका की जानिब कूच कर गया ।

(اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ)

(अल्लाह ﷻ की इन पर रहमत हो और इन के सद्के हमारी मगफ़िरत हो । आमीन)



हदीसे कुदसी

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 54 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब, "नसीहतों के मदनी फूल ब वसीलए अहादीसे रसूल" सफ़हा 51 ता 52 पर है :
अल्लाह ﷻ इरशाद फ़रमाता है :

ऐ इब्ने आदम ! जिस ने हंस हंस कर गुनाह किये मैं उसे रुला रुला कर जहन्म में डालूंगा और जो मेरे खौफ़ से रोता रहा मैं उसे खुश कर के जन्नत में दाख़िल करूंगा ।

ऐ इब्ने आदम !

❁...कितने ग़नी ऐसे हैं जो रोज़े हिसाब मोहताजी व मुफ़िलसी की तमन्ना करेंगे ?

❁...कितने बे रहूम ऐसे हैं जिन्हें मौत ज़लीलो रुस्वा कर देगी ?

❁...कितनी शीरीं चीज़ें ऐसी हैं जिन्हें मौत तलख़ कर देगी ?

❁...ने'मतों पर कितनी खुशियां ऐसी हैं कि जिन्हें मौत गदला कर देगी ?

❁...कितनी खुशियां ऐसी हैं जो अपने बा'द तवील ग़म लाएंगी ?

(مجموعه رسائل الامام الغزالي، المواعظ في الاحاديث القدسية، ص 577)

أَلْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِبِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط

तिलावते कुरआने मजीद, जिःक्रुल्लाह की
कसरत, ज़बान के कुपले मदीना, मशाकीन से
महब्बत और इन की हम नशीनी के फज़ाइल

﴿1﴾.....हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ बयान करते हैं कि मैं ने बारगाहे रिसालत में अर्ज़ की : “या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मुझे कोई नसीहत फ़रमाइये ।” आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “मैं तुम्हें ख़ौफ़े ख़ुदा की नसीहत करता हूँ । बेशक़ येह तुम्हारे दीन की अस्ल है ।” मैं ने अर्ज़ की : “और नसीहत फ़रमाइये ।” इरशाद फ़रमाया : “कुरआने मजीद की तिलावत और जिःक्रुल्लाह कसरत से किया करो कि येह तुम्हारे लिये आस्मानों और ज़मीन में नूर होंगे ।” मैं ने अर्ज़ की : “या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ कुछ और नसीहत फ़रमाइये ।” इरशाद फ़रमाया : “जिहाद को अपने ऊपर लाज़िम कर लो क्यूंकि येह मेरी उम्मत की रहबानिय्यत⁽¹⁾ है ।” मैं ने अर्ज़ की : “या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ कुछ और नसीहत फ़रमाइये ।” इरशाद फ़रमाया : “कम हंसा करो कि जि़यादा हंसना दिलों को मुर्दा और चेहरे को बे नूर कर देता है ।” मैं ने अर्ज़ की : “मजीद नसीहत फ़रमाइये ।” इरशाद फ़रमाया : “अच्छी बात के इलावा ख़ामोश ही रहो कि ख़ामोशी तुम्हारे शैतान से ढाल और दीनी कामों में तुम्हारी मददगार है ।”

①.....इबादत व रियाज़त में मुबालगा करने और लोगों से दूर रहने को रहबानिय्यत कहते हैं ।

(تفسير بضاوى، ۲۷، تحت الآية: ۲۷، ج ۵، ص ۳۰۵)

मैं ने अर्ज़ की : “कुछ और नसीहत फ़रमाइये ।” इरशाद फ़रमाया : “(दुन्यावी मुअमलात में) अपने से अदना को देखो आ'ला की तरफ़ मत देखो क्यूंकि येह अमल इस से बेहतर है कि ¼ **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ की ने'मत को हक़ीर जानने लगे ।” मैं ने अर्ज़ की : “या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ कुछ और नसीहत फ़रमाइये ।” इरशाद फ़रमाया : “मसाकीन से महब्बत करो और उन की सोहबत इख़ितयार करो ।” मैं ने अर्ज़ की : “मज़ीद नसीहत फ़रमाइये ।” इरशाद फ़रमाया : “हक़ बात कहो अगर्चे कड़वी हो ।” मैं ने अर्ज़ की : “कुछ और भी इरशाद फ़रमाइये ।” इरशाद फ़रमाया : “रिश्तेदारों से तअल्लुक़ जोड़ो अगर्चे वोह तुम से क़तए तअल्लुक़ी करें ।” मैं ने अर्ज़ की : “या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ और नसीहत फ़रमाइये ।” इरशाद फ़रमाया : “**اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ के मुअमले में किसी की मलामत से ख़ौफ़ ज़दा न होना ।” मैं ने अर्ज़ की : “और नसीहत फ़रमाइये ।” इरशाद फ़रमाया : “लोगों के लिये वोही पसन्द करो जो अपने लिये पसन्द करते हो ।” फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने अपना दस्ते मुबारक मेरे सीने पर मारा और इरशाद फ़रमाया : “ऐ अबू ज़र ! तदबीर जैसी कोई अक़ल मन्दी नहीं, गुनाहों से बचने जैसी कोई परहेजगारी नहीं और हुस्ने अख़लाक़ जैसी कोई शराफ़त नहीं ।”⁽¹⁾

हुस्ने अख़लाक़ की फ़ज़ीलत

﴿2﴾.....अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तजा क़रमैल्लाह तَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيم से रिवायत है कि “हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे

①.....التّرعيب والترهيب، كتاب القضاء، باب التّرهيب من الظلم ودعاء المظلوم،

الحديث: ٢٤، ج ٣، ص ١٣١.

मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया :
 “बेशक बन्दा हुस्ने अख़्लाक के ज़रीए दिन में रोज़ा रखने और रात में क़ियाम करने वालों के दरजे को पा लेता है और कभी बन्दे को मुतकब्बिर व सरकश लिख दिया जाता है हालांकि वोह अपने घर वालों के इलावा किसी का भी मालिक नहीं होता ।” (1)

﴿3﴾.....उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीका رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुरहीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “बन्दा हुस्ने अख़्लाक की वजह से तहज्जुद गुज़ार और सख़्त गर्मी में रोज़े के सबब प्यासा रहने वाले के दरजे को पा लेता है ।” (2)

﴿4﴾.....हज़रते सय्यिदुना अबू दर्दा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “मीज़ाने अमल में हुस्ने अख़्लाक से ज़ियादा वज़नी कोई चीज़ नहीं ।” (3)

﴿5﴾.....हज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “क्या मैं तुम्हें तुम में सब से बेहतर शख़्स के बारे में ख़बर न दूँ?” हम ने अर्ज़ की : “क्यूं नहीं ।” इरशाद फ़रमाया : “वोह जो तुम में से अच्छे अख़्लाक वाला है ।” (4)

﴿6﴾.....हज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि नबियों के सुल्तान, रहमते अ़लमिय्यान صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद

①.....المعجم الاوسط، الحديث: ٦٢٧٣-٦٢٨٣، ج٤، ص٣٦٩-٣٧٢.

②.....الاستذكار للقرطبي، باب ماجاء في حسن الخلق، الحديث: ١٦٧٢، ج٨، ص٢٧٩.

③.....سنن ابى داؤد، باب في حسن الخلق، الحديث: ٤٧٩٩، ج٤، ص٣٣٢.

④.....الترغيب والترهيب، كتاب الادب، باب الترغيب في الخلق الحسن.....الخ،

الحديث: ٤٠٧١، ج٣، ص٣٣٠.

फ़रमाया : “बरोजे क़ियामत तुम में से मुझे ज़ियादा महबूब और मेरी मजलिस में ज़ियादा करीब वोह लोग होंगे जो अच्छे अख़्लाक़ वाले और अज़िज़ी इख़्तियार करने वाले होंगे, वोह लोगों से और लोग उन से महबूबत करते हैं और तुम में से मेरे नज़दीक नापसन्दीदा और मेरी मजलिस में मुझ से ज़ियादा दूर वोह लोग होंगे जो बहुत ज़ियादा बातें करने वाले, बक बक करने वाले और तकबूर करने वाले होंगे।” (1)

﴿7﴾.....हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से रिवायत है कि हुजूर सरवरे अ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “**اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : मैं ने बन्दों को अपने इल्म से पैदा किया। पस जिस से मैं भलाई का इरादा करता हूँ उसे अच्छे अख़्लाक़ अ़ता कर देता हूँ और जिस से बुराई का इरादा करता हूँ उसे बुरे अख़्लाक़ दे देता हूँ।” (2)

﴿8﴾.....हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन समुरह رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि हुजूर पुरनूर, शाफ़ेए यौमुन्नुशूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “मुसलमानों में से सब से ज़ियादा अच्छा वोह है जिस के अख़्लाक़ सब से ज़ियादा अच्छे हैं।” (3)

﴿9﴾.....हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना, फैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

①.....سنن الترمذی، کتاب البر والصلة، الحدیث: ۲۰۲۵، ج ۳، ص ۴۰۹۔

الترغیب والترہیب، کتاب الادب، باب الترغیب فی الخلق الحسن.....الخ،

الحدیث: ۴۰۸۰، ج ۳، ص ۳۳۲۔

②.....جامع الاحادیث، حرف القاف مع الالف، الحدیث: ۱۵۱۲۹، ج ۵، ص ۳۲۵۔

③.....المستند للإمام احمد بن حنبل، حدیث جابر بن سمره، الحدیث: ۲۰۸۷۴، ج ۷، ص ۴۱۰۔

ने इरशाद फ़रमाया : कामिल मोमिन वोह है जिस के अख़्लाक सब से ज़ियादा अच्छे हैं ।” (1)

﴿10﴾.....हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि **اَبُوْلَاٰح** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्जहुन अनिल उयूब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “**اَبُوْلَاٰح** ने जिस बन्दे के ख़ल्क और खुलुक (या'नी सूरत और सीरत) को अच्छा बनाया उसे आग न खाएगी ।” (2)

﴿11﴾.....हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “अच्छे अख़्लाक गुनाहों को इस तरह पिघला देते हैं जिस तरह सूरज की हरारत बर्फ़ को पिघला देती है ।” (3)

﴿12﴾.....हज़रते सय्यिदुना उसामा बिन शरीक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि सहाबए किराम رَضُواْ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ ने बारगाहे रिसालत में अर्ज़ की : “या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ इन्सान को सब से अच्छी चीज़ कौन सी अता फ़रमाई गई ?” आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “इन्सान को हुस्ने अख़्लाक से ज़ियादा अच्छी कोई चीज़ अता नहीं की गई ।” (4)

﴿13﴾.....हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ बयान करते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुरहीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने

①.....سنن ابى داؤد، كتاب السنه، باب الدليل على زيادة الايمان.....الخ،

الحديث: ٤٦٨٢، ج ٤، ص ٢٩٠.

②.....شعب الايمان للبيهقى، باب فى حسن الخلق، الحديث: ٨٠٣٨، ج ٦، ص ٢٤٩.

③.....شعب الايمان للبيهقى، باب فى حسن الخلق، الحديث: ٨٠٣٦، ج ٦، ص ٢٤٧.

④.....المعجم الكبير، الحديث: ٤٦٣، ج ١، ص ١٧٩.

मुझे नसीहत फ़रमाई कि “जहां भी रहे **اَللّٰهُ** से डरते रहो और गुनाह सरज़द हो जाए तो फ़ैरन नेकी कर लिया करो कि येह गुनाह को मिटा देगी और लोगों से अच्छे अख़्लाक से पेश आओ।”⁽¹⁾

नर्म मिजाजी, खुश अख़्लाकी और आजिजी की फ़जीलत

﴿14﴾.....हज़रते सय्यिदुना जाबिर **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** से रिवायत है कि हुज़ूर सय्यिदे अलम, नूरे मुजस्सम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने इरशाद फ़रमाया : “क्या मैं तुम्हें उस शख्स के बारे में न बताऊं जिस पर जहन्नम की आग हुराम है? जो नर्म तबीअत, नर्म ज़बान, लोगों से दरगुज़र करने और हाज़त पूरी करने वाला हो।”⁽²⁾

﴿15﴾.....हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने इरशाद फ़रमाया : “मोमिन इतना नर्म तबीअत, नर्म ज़बान वाला होता है कि उस की नर्मी की वजह से लोग उसे अहमक ख़याल करते हैं।”⁽³⁾

﴿16﴾.....हज़रते सय्यिदुना इरबाज़ बिन सारिया **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने इरशाद फ़रमाया : “मोमिन नकील वाले ऊंट की तरह होता है कि अगर उसे बांध दिया जाए तो ठहर जाता है और अगर चलाया जाए तो चल पड़ता है और अगर किसी पथरीली जगह पर बिठाया जाए तो बैठ जाता है।”⁽⁴⁾

①.....سنن الترمذی، کتاب البر والصلة، باب ماجاء فی معاشرۃ الناس، الحدیث: ۱۹۹۴،

ج ۳، ص ۳۹۷.

②.....المعجم الاوسط، الحدیث: ۸۳۷، ج ۱، ص ۲۴۴.

③.....شعب الایمان للبيهقي، باب فی حسن الخلق، الحدیث: ۸۱۲۷، ج ۶، ص ۲۷۲.

④.....سنن ابن ماجه، کتاب السنه، باب اتباع سنة خلفاء.....الخ، الحدیث: ۴۳، ج ۱، ص ۳۲-

تفسیر روح البیان، الفرقان، تحت الآیه: ۶۳، ج ۶، ص ۲۴۰، بدون وان سيق اناسق.

﴿17﴾.....हज़रते सय्यिदुना अबू हरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “खुश ख़बरी है उस शख़्स के लिये जिस ने बिग़ैर नक़्स व ऐब के आज़िज़ी की और खुश ख़बरी है उस के लिये जो उलमाए फ़िक्ह व हिक़मत से मेल जोल रखे और ज़लील और गुनहगारों की सोहबत से दूर रहे। खुश ख़बरी है उस के लिये जो अपना ज़ाइद माल राहे खुदा में ख़र्च कर दे और फुज़ूल गुफ़्तू से बाज़ रहे। खुश ख़बरी है उस के लिये जो मेरी सुन्नत को अपनाए हुवे हो और सुन्नत को छोड़ कर बिदअत इख़्तियार न करे।” (1)

लोगों से ख़न्दा पेशानी से मिलने की फ़ज़ीलत

﴿18﴾.....हज़रते सय्यिदुना अबू हरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि मक्की मदनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “तुम लोगों को अपने अमवाल से खुश नहीं कर सकते लेकिन तुम्हारी ख़न्दा पेशानी और खुश अख़्लाकी उन्हें खुश कर सकती हैं।” (2)

﴿19﴾.....हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अब्दुल्लाह رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि शहनशाहे मदीना, करारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “अफ़ज़ल तरीन सदका येह है कि तुम अपने बरतन से पानी अपने भाई के बरतन में उंडेल दो और उस से ख़न्दा पेशानी से मिलो।” (3)

①.....شعب الإيمان للبيهقي، باب في الزهد وقصر العمل، الحديث: ١٠٥٦٣، ج ٧،

ص ٣٥٥، بتغير قليل.

②.....المستدرک للحاکم، کتاب العلم، الحديث: ٤٣٥، ج ١، ص ٣٢٩.

③.....سنن الترمذی، کتاب البر والصلّة عن رسول الله، باب ما جاء في طلاقة الوجه..... الخ،

الحديث: ١٩٧٧، ج ٣، ص ٣٩١، مفهوماً.

मुसलमान भाई के लिये मुस्कुराने की फ़ज़ीलत

﴿20﴾.....हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरफूअन रिवायत है कि सरकारे मदीना, राहृत क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “तुम्हारा अपने डोल से अपने भाई का डोल भरना सदक़ा है। तुम्हारा नेकी का हुक़्म देना और बुराई से मन्अ करना सदक़ा है। तुम्हारा अपने मुसलमान भाई के लिये मुस्कुराना सदक़ा है और तुम्हारा किसी भटके हुवे को रास्ता बताना भी सदक़ा है।” (1)

﴿21﴾.....हज़रते सय्यिदतुना उम्मे दरदा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के मुतअल्लिक़ फ़रमाती हैं कि वोह दौराने गुफ़्तगू मुस्कुराया करते थे। मैं ने उन से इस बारे में पूछा तो उन्हों ने जवाब दिया कि मैं ने सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को देखा कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ दौराने गुफ़्तगू मुस्कुराते रहते थे।” (2)

﴿22﴾.....हज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि जब रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर वही नाज़िल होती तो मैं कहता कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ कौम को डर सुनाने वाले हैं और जब वही नाज़िल न होती तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ लोगों में सब से ज़ियादा मुस्कुराने वाले और अच्छे अख़्लाक़ वाले होते थे। (3)

①..... شعب الايمان للبيهقي، باب في الزكاة، الحديث: ٣٣٢٨، ج ٣، ص ٢٠٤.

②..... تاريخ مدينة دمشق لابن عساکر، الرقم ٤٦٤٥ عويعمر بن زيد بن قيس، ج ٧، ص ١٨٧.

③..... الكامل في ضعفاء الرجال، الرقم ١٦٦٣١٤٢ محمد بن عبدالرحمن بن ابي ليلى،

ج ٧، ص ٣٩٤، بتغير قليل.

नर्मी और बुर्दबारी की फ़ज़ीलत

﴿23﴾.....हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मुग़फ़ल رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे हबीब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ नर्मी फ़रमाने वाला है और नर्मी को पसन्द फ़रमाता है और नर्मी पर वोह कुछ अ़ता फ़रमाता है जो सख़ी पर अ़ता नहीं फ़रमाता ।”(1)

﴿24﴾.....उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना अ़इशा सिद्दीका رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हर मुअामले में नर्मी को ही पसन्द फ़रमाता है ।”(2)

﴿25﴾.....हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “नर्मी जिस चीज़ में होती है उसे जीनत बख़्शती है ।”(3)

﴿26﴾.....उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना अ़इशा सिद्दीका رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़िन, रहूमतुल्लिल आलमीन صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ किसी घराने से भलाई का इरादा फ़रमाता है तो उन (के दिलों) में उल्फ़त व नर्मी पैदा फ़रमा देता है ।”(4)

﴿27﴾.....हज़रते सय्यिदुना सहल बिन सा'द رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि शफ़ीउल मुज़निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

①.....سنن ابى داؤد، كتاب الادب، باب فى الرفق، الحديث: ٤٨٠٧، ج ٤، ص ٣٣٤.

②.....صحيح البخارى، كتاب الادب، باب الرفق فى الامر كله، الحديث: ٦٠٢٤، ج ٤، ص ١٠٦.

③.....مسند البزار، مسند ابى حمزه انس بن مالك، الحديث: ٧٠٠٢، ج ٢، ص ٣٢٩.

④.....المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عائشه، الحديث: ٤٨١٠، ج ٩، ص ٣٤٥.

ने इरशाद फ़रमाया : “इतमीनान **اَللّٰهُ** **عَزَّوَجَلَّ** की तरफ़ से और जल्द बाज़ी शैतान की तरफ़ से है।” (1)

﴿28﴾.....हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** से रिवायत है कि **اَللّٰهُ** **عَزَّوَجَلَّ** के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्जहुन अनिल उयूब **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने इरशाद फ़रमाया : “आदमी की इज़्ज़त उस का दीन, मुरव्वत (مُرُوَّةٌ) उस की अक्ल और उस की शराफ़त उस का अख़्लाक है।” (2)

﴿29﴾.....हज़रते सय्यिदुना अशज अ़सरी **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** बयान करते हैं कि हुस्ने अख़्लाक के पैकर, नबियों के ताजवर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने मुझ से इरशाद फ़रमाया : “तुम में दो ख़स्लतें ऐसी हैं जिन्हें **اَللّٰهُ** **عَزَّوَجَلَّ** पसन्द फ़रमाता है वोह बुर्दबारी और इतमीनान हैं।” मैं ने अ़र्ज़ की : “या रसूलल्लाह **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** क्या वोह ख़स्लतें मैं ने खुद अपने अन्दर पैदा कीं हैं या **اَللّٰهُ** **عَزَّوَجَلَّ** ने मुझे इन पर फ़ितरतन पैदा फ़रमाया है?” इरशाद फ़रमाया : “नहीं बल्कि **اَللّٰهُ** **عَزَّوَجَلَّ** ने तुम्हारी फ़ितरत इन्हीं दो ख़स्लतों पर रखी है।” फिर मैं ने कहा : “तमाम ता’रीफ़ें उस रब **عَزَّوَجَلَّ** के लिये हैं जिस ने मेरी फ़ितरत उन दो ख़स्लतों पर रखी जिन से वोह और उस के रसूल **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** राज़ी हैं।” (3)

﴿30﴾.....हज़रते सय्यिदुनुना उम्मे सलमा **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا** से रिवायत है कि ख़ातमुल मुर्सलीन, रहूमतुल्लिल अ़ालमीन **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ**

1.....سنن الترمذی، کتاب البر والصلة، باب ما جاء فی الرفق، الحدیث: ۲۰۱۹، ج ۳، ص ۴۰۷.

2.....المسندللامام احمدبن حنبل، مسندابی هريره، الحدیث: ۸۷۸۲، ج ۳، ص ۲۹۲.

3.....السنن الكبرى للبيهقي، کتاب النکاح، باب ما جاء فی قبلة الجسد، الحدیث: ۱۳۰۸۷.

ने इरशाद फ़रमाया : “जिस में तीन बातों में से कोई एक भी न पाई जाए तो वोह अपने किसी भी अमल के सवाब की उम्मीद न रखे : (1) ऐसा तक्वा जो हराम कामों से रोके (2) ऐसा हिल्म जो उसे गुमराही से रोके (3) हुस्ने अख़्लाक जिस के साथ वोह लोगों में जिन्दगी गुज़ारे ।” (1)

सब्र व सख़ावत की फ़ज़ीलत

﴿31﴾.....हज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “(कामिल) ईमान सब्र और सख़ावत का ही नाम है ।” (2)

﴿32﴾.....हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से रिवायत है कि सय्यिदे अ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “वोह मोमिन जो लोगों से मेल जोल रखता और उन की तरफ़ से पहुंचने वाली तकालीफ़ पर सब्र करता है उस मोमिन से अफ़ज़ल है जो लोगों से मेल जोल नहीं रखता और उन की तरफ़ से पहुंचने वाली तकालीफ़ पर सब्र नहीं करता ।” (3)

﴿33﴾.....हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अब्दुल्लाह رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि रहमते अ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जब हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام को ज़मीनो

①.....شعب الإيمان للبيهقي، باب في حسن الخلق، الحديث: ٨٤٢٤، ج ٦، ص ٣٣٩.

②.....المستدلابي يعلى، مسند جابر بن عبد الله، الحديث: ١٨٤٩، ج ٢، ص ٢٢٠.

③.....السنن الكبرى للبيهقي، كتاب آداب القاضي، باب فضل المؤمن القوى.....الخ،

الحديث: ٢٠١٧٥، ج ١٠، ص ١٥٣.

आस्मान की सैर कराई गई तो आप عَلَيْهِ السَّلَام ने एक शख्स को फ़िस्को फुजूर में मुब्तला देख कर उस के लिये हलाकत दुआ फ़रमाई तो उसे हलाक कर दिया गया। फिर एक और शख्स को गुनाहों में मुब्तला देख कर उस के ख़िलाफ़ भी दुआ फ़रमाई तो **اللَّهُ** عَزَّوَجَلَّ ने उन की तरफ़ वही फ़रमाई कि ऐ इब्राहीम ! बेशक जिस ने मेरी नाफ़रमानी की वोह मेरा ही बन्दा है और तीन बातों में से कोई एक उसे मेरे ग़ज़ब से बचा लेगी, या तो वोह तौबा कर लेगा तो मैं उस की तौबा क़बूल कर लूंगा या वोह मुझ से मग़फ़िरत चाहेगा तो मैं उस की मग़फ़िरत फ़रमा दूंगा या फिर उस की नस्ल से ऐसे लोग पैदा होंगे जो मेरी इबादत करेंगे। ऐ इब्राहीम ! क्या तुम्हें मा'लूम नहीं कि मेरे नामों में से एक नाम येह भी है कि मैं सब्बूर (या'नी बहुत ज़ियादा हिल्म वाला) हूँ।”(1)

﴿34﴾.....हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अशअरी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि हुजूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “किसी तकलीफ़ देह बात को सुन कर **اللَّهُ** عَزَّوَجَلَّ से ज़ियादा सब्र करने वाला कोई नहीं कि लोग उस की तरफ़ अवलाद मन्सूब करते हैं लेकिन **اللَّهُ** عَزَّوَجَلَّ फिर भी उन्हें मुआफ़ फ़रमाता और रिज़क़ अता फ़रमाता है।”(2)

﴿35﴾.....हज़रते सय्यिदुना अबू मसऊद رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि जब तुम अपने किसी मुसलमान भाई को गुनाहों में मुब्तला

①.....المعجم الاوسط، الحديث: ٧٤٧٥، ج ٥، ص ٣٢٢.

②.....صحيح المسلم، كتاب صفة القيامة والجنة والنار، باب لا احد اصبر على..... الخ،

الحديث: ٤، ٢٨٠٦، ص ١٠٦.

देखो तो उस के ख़िलाफ़ शैतान के मददगार न बन जाओ कि तुम यूँ कहो : “**अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** उसे रुस्वा करे, **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** उस का बुरा करे।” बल्कि यूँ कहो : “**अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** उसे तौबा की तौफीक़ अता फ़रमाए और उस की मग़फ़िरत फ़रमाए।” (1)

गुस्से के वक़्त खुद पर काबू पाने की फ़ज़ीलत

﴿36﴾.....हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** से रिवायत है कि रसूले अकरम, शाहे बनी आदम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने इरशाद फ़रमाया : “ताक़तवर वोह नहीं जो लोगों को पछाड़ दे।” सहाबए किराम **رَضُواْ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ** ने अर्ज़ की : “या रसूलल्लाह **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** फिर ताक़तवर कौन है ?” इरशाद फ़रमाया : “वोह जो गुस्से के वक़्त अपने आप को काबू में रखे।” (2)

﴿37﴾.....हज़रते सय्यिदुना अनस **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** बयान करते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** कुछ लोगों के पास से गुज़रे तो देखा कि वोह पथ्थर उठाने का मुकाबला कर रहे थे। आप **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने इरशाद फ़रमाया : “येह क्या हो रहा है ?” लोगों ने अर्ज़ की : “या रसूलल्लाह **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ** येह वोह पथ्थर है जिसे हम ज़मानए जाहिलिय्यत में ताक़तवर का पथ्थर कहा करते थे।” आप **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने इरशाद फ़रमाया : “क्या मैं तुम्हें तुम्हारे सब से ताक़तवर शख़्स के मुतअल्लिक़ न बताऊँ ? तुम में से ज़ियादा ताक़तवर वोह है जो गुस्से के वक़्त खुद

①.....المعجم الكبير، الحديث: ٨٥٧٤، ج ٩، ص ١١٠، بتغير قليل.

②.....صحيح المسلم، كتاب البر والصلة، باب فضل من يملك نفسه.....الخ،

الحديث: ٨، ٢٦٠، ص ١٤٠.

पर ज़ियादा काबू पाने वाला है।” (1)

﴿38﴾.....हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अम्र رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि एक शख्स ने बारगाहे रिसालत में अर्ज़ की : “या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मुझे कौन सी चीज़ ग़ज़बे इलाही से बचा सकती है ?” आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “गुस्सा मत किया करो।” (2)

﴿39﴾.....हज़रते सय्यिदुना वहब बिन मुनब्बेह رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि “तौरात में लिखा है : “जब तुझे गुस्सा आए तो मुझे याद कर, जब मुझे जलाल आएगा तो मैं तुझे याद रखूंगा और जब तुझ पर जुल्म किया जाए तो तू सब्र कर, मेरा तेरी मदद करना तेरे लिये अपनी मदद करने से बेहतर है। अपने हाथ को हरकत दे, तेरे लिये रिज़क़ के दरवाज़े खुल जाएंगे।” (3)

रहूम और नर्म दिली की फ़ज़ीलत

﴿40﴾.....हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए कुदरत में मेरी जान है **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ सिर्फ़ रहीम को ही अपनी रहूमत अता फ़रमाता है।” हम ने अर्ज़ की : “या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ क्या हम सब रहीम हैं ?” इरशाद फ़रमाया कि “रहीम वोह नहीं जो महज़ अपनी ज़ात और अपने अहले ख़ाना पर रहूम करे बल्कि

①.....جامع الاحاديث للسيوطي بمسندانس بن مالك، الحديث: ٨٧، ١٣٠، ١٨، ج ١، ص ٤٩٣.

②.....المسند للإمام احمد بن حنبل، مسند ابن عمرو، الحديث: ٦٦٤٦، ج ٢، ص ٥٨٧.

③.....فيض القدير، تحت الحديث: ٦٠٢٢، ج ٤، ص ٦٢٩.

रहीम वोह है जो तमाम मुसलमानों पर रहूम करे ।”(1)

﴿41﴾.....अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया कि **اللَّهُ** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : “अगर तुम मेरी रहूमत चाहते हो तो मेरी मख़्लूक़ पर रहूम करो ।”(2)

﴿42﴾.....हज़रते सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि मीठे मीठे आका, मक्की मदनी मुस्तफ़ा عَزَّوَجَلَّ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “बेशक **اللَّهُ** عَزَّوَجَلَّ रहूम करने वाले बन्दों पर ही रहूम फ़रमाता है ।”(3)

﴿43﴾.....हज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जो लोगों पर रहूम नहीं करता **اللَّهُ** عَزَّوَجَلَّ उस पर रहूम नहीं फ़रमाता ।”(4)

﴿44﴾.....हज़रते सय्यिदुना जरीर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जो रहूम नहीं करता उस पर रहूम नहीं किया जाता और जो मुआफ़ नहीं करता उसे मुआफ़ नहीं किया जाता ।”(5)

①.....الزهدهلهدناد،باب الرحمة،الحديث:١٣٢٥،ج٢،ص٦١٦.

②.....الكامل فى ضعفاء الرجال،الرقم٥٩٣١٢٣خالدين عمرو،ج٣،ص٤٥٧.

③.....صحيح البخارى،كتاب الجنائز،باب قول النبى ”يعذب الميت.....الخ“،

الحديث:١٢٨٤،ج١،ص٤٣٤.

④.....صحيح المسلم،كتاب الفضائل،باب رحمة الصبيان والعيال وتواضعه،

الحديث:٢٣١٩،ص١٢٦٨.

⑤.....الترغيب والترهيب،كتاب القضاء وغيره،باب فى شفقة على خلق الله.....الخ،

الحديث:٣٤٤٨،ج٣،ص١٥٤.

﴿45﴾.....हज़रते सय्यिदुना जरीर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़लाक صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जो अहले ज़मीन पर रहूम नहीं करता आस्मान का मालिक उस पर रहूम नहीं फ़रमाता ।” (1)

﴿46﴾.....हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मसऊद رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “अहले ज़मीन पर रहूम करो, आस्मान का मालिक तुम पर रहूम करेगा ।” (2)

﴿47﴾.....हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अम्र رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ बयान करते हैं कि मैं ने अब्बाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे हबीब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को इरशाद फ़रमाते हुवे सुना कि “रहूम करो तुम पर रहूम किया जाएगा । मुआफ़ करो तुम्हें मुआफ़ किया जाएगा ।” (3)

﴿48﴾.....हज़रते सय्यिदुना सहल बिन सा'द رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि एक औरत बारगाहे रिसालत में किसी हाजत की गरज़ से हाज़िर हुई लेकिन उसे नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के करीब पहुंचने के लिये कोई जगह न मिल सकी । येह देख कर एक सहाबी अपनी जगह से उठ गए और वोह औरत वहां बैठ गई । फिर उस की हाजत पूरी हो गई । आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने उन सहाबी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से दरयाफ़्त फ़रमाया : “तुम ने ऐसा क्यूं किया ?” उन्होंने ने अर्ज़ की : “मुझे इस पर

1.....الترغيب والترهيب، كتاب القضاء وغيره، باب في شفقة علي خلق الله.....الخ،

الحديث: ٣٤٥١، ج ٣، ص ١٥٤.

2.....مصنف ابن ابى شيبه، كتاب الادب، باب ما ذكر في الرحمة من الثواب، الحديث: ١٠،

ج ٦، ص ٩٤.

3.....شعب الایمان للبيهقي، باب في معالجة كل ذنب بالتوبة، الحديث: ٧٢٣٦، ج ٥، ص ٤٤٩.

रहूम आ गया था।” येह सुन कर आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद

फ़रमाया : “**اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ तुम पर रहूम फ़रमाए।” (1)

﴿49﴾.....हज़रते सय्यिदुना कुरह رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ बयान करते हैं कि एक शख़्स ने बारगाहे रिसालत में अर्ज़ की : “या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मैं बकरी को ज़ब्ह करता हूँ तो मुझे उस पर रहूम आ जाता है।” आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “अगर तुम बकरी पर रहूम करोगे तो **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ तुम पर रहूम फ़रमाएगा।” (2)

गुस्सा पी जाने की फ़ज़ीलत

﴿50﴾.....हज़रते सय्यिदुना अनस जुहनी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जो इन्तिक़ाम की कुदरत के बा वुजूद गुस्सा पी जाए तो **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ उसे क़ियामत के दिन मख़्लूक के सामने बुलाएगा और उसे इख़्तियार देगा कि हु़रों में से जिसे चाहे ले ले।” (3)

﴿51﴾.....हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से रिवायत है कि दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहुरो बर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “आदमी का कोई घूंट पीना गुस्से के उस घूंट से अफ़ज़ल नहीं है जिसे वोह रिज़ाए इलाही के लिये पीता है।” (4)

1.....المعجم الكبير، الحديث: ٥٨٥٤، ج ٦، ص ١٦١، رحمتها بادلہ افرحمتها.

2.....المسنن للإمام احمد بن حنبل، بقیة حدیث معاوية بن قره، الحديث: ١٥٥٩٢، ج ٥، ص ٣٠٤.

3.....سنن الترمذی، کتاب صفة القيامة، باب ٤٨، الحديث: ٢٥٠١، ج ٤، ص ٢٢٢.

4.....المسنن للإمام احمد بن حنبل، بسند عبد الله بن عمر، الحديث: ٦١٢٢، ج ٢، ص ٤٨٢.

﴿52﴾.....हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ बयान करते हैं कि

हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ कुछ ऐसे लोगों के करीब से गुज़रे जो कुशती लड़ रहे थे। आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : “येह क्या हो रहा है ?” लोगों ने अर्ज़ की : “या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ फुलां बहुत क़वी है। जो भी उस से लड़ता है वोह उसे पछाड़ देता है।” तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “क्या मैं तुम्हें इस से भी ज़ियादा ताक़तवर के बारे में न बताऊं ? वोह शख़्स जिस पर कोई जुल्म करे और वोह गुस्सा पी जाए और अपने गुस्से पर काबू पा ले तो ऐसा शख़्स अपने और दूसरे शख़्स के शैतान पर ग़ालिब आ जाता है।”⁽¹⁾

﴿53﴾.....हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि

मीठे मीठे आका, मक्की मदनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “क्या तुम अबू ज़मज़म की तरह बनने से अज़िज़ हो ?” सहाबए किराम رَضُوا اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ ने अर्ज़ की : “अबू ज़मज़म कौन है ?” आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “येह वोह शख़्स है कि जब सुब्ह होती है तो कहता है : **اللَّهُمَّ إِنِّي وَهَبْتُ نَفْسِي وَعِرْضِي** : या'नी ऐ **اَللّٰهُ** मैं ने अपनी जान और इज़्ज़त हिबा की। पस वोह गाली देने वाले को गाली न देता, जुल्म करने वाले पर जुल्म न करता और मारने वाले को न मारता।”⁽²⁾

﴿54﴾.....हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास

وَالْكُظَيْبِ بْنِ الْعَيْظِ (ب، ٤، ال عمران: ١٣٤) رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا आयते मुबारका

①.....مسند البزار، مسند ابی حمزه انس بن مالك، الحديث: ٧٢٧٢، ج ٢، ص ٣٤٥.

②.....جامع الاحاديث للسيوطي، حرف الهمزة مع الياء، الحديث: ٩٤٤٧، ج ٣، ص ٤١٠.

“तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और गुस्से को पीने वाले ।” की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं कि “इस से मुराद यह है कि जब कोई शख़्स तुम से ज़बान दराज़ी करे और तुम उस का जवाब देने की ताक़त रखते हो लेकिन फिर भी अपना गुस्सा पी जाते हो और उसे कोई जवाब नहीं देते ।”

लोगों से दर गुज़र करने की फ़ज़ीलत

﴿55﴾.....हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनील उयूब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “क़ियामत के दिन जब लोग हिसाब के लिये खड़े होंगे तो एक मुनादी ए’लान करेगा कि “वोह शख़्स जिस का अज़्र **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर है वोह उठे और जन्नत में दाख़िल हो जाए ।” फिर दूसरी मरतबा ए’लान करेगा कि “वोह शख़्स जिस का अज़्र **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर है वोह खड़ा हो ।” लोग पूछेंगे : “वोह कौन है जिस का अज़्र **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर है ?” मुनादी कहेगा : “वोह जो लोगों से दर गुज़र करने वाले थे ।” चुनान्चे, बे शुमार लोग खड़े होंगे और बिगैर हिसाबो किताब जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे ।”(1)

﴿56﴾.....हज़रते सय्यिदुना उक़्बा बिन अ़मिर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ बयान करते हैं कि मैं हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से मिला तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने मेरा हाथ पकड़ कर इरशाद फ़रमाया : “ऐ उक़्बा ! क्या मैं तुम्हें दुन्या

①.....الترغيب والترهيب، كتاب الحدود، باب الترغيب في العفو عن القاتل، الحديث: ١٧،

व आख़िरत वालों के अच्छे अख़्लाक के बारे में न बताऊं?" मैं ने अर्ज़ की : "ज़रूर इरशाद फ़रमाइये ।" आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : "जो तुम से क़तए तअल्लुक़ करे तुम उस से तअल्लुक़ जोडो, जो तुम्हें महरूम करे तुम उसे अता करो और जो तुम पर जुल्म करे तुम उसे मुआफ़ कर दो ।"(1)

﴿57﴾.....हज़रते सय्यिदुना उबय्य बिन का'ब رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ سے रिवायत है कि हज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : "जिसे येह पसन्द हो कि उस के लिये (जन्नत में) महल बनाया जाए और उस के दरजात बुलन्द किये जाएं तो उसे चाहिये कि जो उस पर जुल्म करे उसे मुआफ़ कर दे, जो उसे महरूम करे उसे अता करे और जो उस से क़तए तअल्लुकी करे उस से तअल्लुक़ जोडे ।"(2)

﴿58﴾.....हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह जदली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي बयान करते हैं कि मैं ने उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीका رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا से हज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुरहीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के हुस्ने अख़्लाक के मुतअल्लिक़ पूछा तो उन्होंने ने फ़रमाया : "आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ न बुरी बात करने वाले, न बुरे काम करने वाले, न बाज़ारों में शोर मचाने वाले और न ही बुराई का बदला बुराई से देने वाले थे बल्कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ तो मुआफ़ फ़रमाने वाले और दर गुज़र फ़रमाने वाले थे ।"(3)

1.....المعجم الكبير، الحديث: ٧٣٩، ج ١٧، ص ٢٦٩.

2.....المستدرک، کتاب التفسیر، باب تحت آية: کنتم خیر امة اخرجت للناس،

الحديث: ٣٢١٥، ج ٣، ص ١٢.

3.....سنن الترمذی، کتاب البر والصلة، باب ماجاء فی خلق النبی، الحديث: ٢٠٢٣،

ج ٣، ص ٤٠٩.

﴿59﴾.....उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीका رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا फ़रमाती हैं कि सय्यिदे अ़ालम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने जिहाद के इलावा कभी किसी शख्स को अपने हाथ से नहीं मारा और न ही कभी अपनी ज़ात की ख़ातिर इन्तिक़ाम लिया। हां जब कोई शख्स **अ़ल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की हराम कर्दा चीज़ों का इत्किाब करता तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ **अ़ल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये उस से इन्तिक़ाम लेते। आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ से जो सुवाल किया गया आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने उस से मन्अ नहीं फ़रमाया सिवाए गुनाह का सबब बनने वाली बात के क्यूंकि आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ इन मुआमलात में लोगों से दूर रहते थे। जब भी आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ को दो कामों का इख़्तियार दिया गया तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने आसान काम को ही इख़्तियार फ़रमाया।” (1)

﴿60﴾.....हज़रते सय्यिदुना अबू हु़रैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जो शर्मसार की लगज़िश को मुआफ़ करेगा **अ़ल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन उस के गुनाहों को मुआफ़ फ़रमाएगा।” (2)

﴿61﴾.....उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “अहले मुरव्वत (أُمَّرُؤَاتٍ) की लगज़िशों को मुआफ़ करो जब तक कि वोह शरई सज़ा के हक़दार न हो जाएं।” (3)

①.....المسند للإمام أحمد بن حنبل، مسند عائشه، الحديث: ٢٥٠٣٩، ج ٩، ص ٤٥١، بتغير قليل.

②.....مسند البزار، مسند أبي هريره، الحديث: ٨٩٦٧، ج ٢، ص ٤٧٧.

③.....المسند للإمام أحمد بن حنبل، مسند عائشه، الحديث: ٢٥٥٣٠، ج ٩، ص ٥٤٤.

﴿62﴾.....हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं कि “मुर्व्वत वालों को सज़ा न दो जब कि वोह सालेह हों।” (1)

﴿63﴾.....हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “सदके से माल में हरगिज़ कमी नहीं होती। जो बन्दा दर गुज़र करता है **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ उस की इज़्ज़त बढ़ा देता है और जो **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ के लिये अज़िज़ी करता है **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ उसे बुलन्दी अता फ़रमाता है।” (2)

﴿64﴾.....हज़रते सय्यिदुना मरवान बिन जुनाह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं कि “दुन्या इसी बात पर काइम है कि कोई शख़्स बद सुलूकी करने वाले को मुआफ़ कर दे।” (3)

﴿65﴾.....हज़रते सय्यिदुना मैसरा बिन हल्बस رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं कि “खुश ख़बरी है उस शख़्स के लिये जो उस जगह हक़ अदा करे जहां लोग हक़ अदा करना न जानते हों। पस **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ उसे अपनी रिज़ा की मा'रिफ़्त अता फ़रमा देता है येह ऐसा ज़माना होता है कि गुमनाम रहने वाला ही नजात पा सकता है। उन के दिल तारीकी के चराग़ हैं। **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ उन के लिये जन्नत के दरवाजे खोल देता और उन्हें हर गर्द आलूद अन्धेरे मक़ाम से नजात अता फ़रमाता है।”

①.....فيض القدير، حرف التاء، تحت الحديث: ٢٢٣٣، ج ٣، ص ٢٩٩.

②.....صحيح المسلم، كتاب البر والصلة، باب الاستحباب العفو..... الخ،

الحديث: ٢٥٨٨، ص ١٣٩٧.

③.....تاريخ مدينة دمشق لابن عساکر، الرقم ٢١٥٧ الربيع بن يحيى، ج ١٨، ص ٨٤.

मुसलमानों की ख़ैरख़्वाही की फ़ज़ीलत

﴿66﴾.....हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर رضي الله تعالى عنه से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत صلى الله تعالى عليه وآله وسلم ने इरशाद फ़रमाया : “दीन ख़ैर ख़्वाही है।” सहाबए किराम رضوان الله تعالى عليهم أجمعين ने अर्ज की : “या रसूलल्लाह صلى الله تعالى عليه وآله وسلم किस की ? इरशाद फ़रमाया : “**अब्बाह** की, उस की किताब की, उस के रसूल की, मुसलमानों के इमाम की और आ़म मोअमिनीन की।”⁽¹⁾

﴿67﴾.....हज़रते सय्यिदुना अनस رضي الله تعالى عنه से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुरहीम صلى الله تعالى عليه وآله وسلم ने इरशाद फ़रमाया : “मोमिन एक दूसरे के ख़ैरख़्वाह और आपस में महबबत करने वाले होते हैं अगर्चे उन के शहर मुख़्तलिफ़ हों और मुनाफ़िक़ एक दूसरे से धोका करने वाले होते हैं अगर्चे उन के शहर एक ही हों।”⁽²⁾

﴿68﴾.....हज़रते सय्यिदुना बक्र बिन अब्दुल्लाह मुज़नी رضي الله تعالى عنه फ़रमाते हैं कि “अगर मैं किसी मस्जिद में पहुंचूं और वोह लोगों से खचा खच भरी हो फिर मुझे से पूछा जाए कि इन में सब से बेहतर शख़्स कौन है ? तो मैं सुवाल करने वाले से पूछूंगा : क्या तुम इन में सब से ज़ियादा ख़ैरख़्वाही करने वाले को पहचानते हो ? अगर वोह उस को पहचानता होगा तो मैं कहूंगा कि “येही सब से बेहतर है और मैं येह भी जानता हूं कि इन्हें धोका देने वाला सब से बद तरीन शख़्स है। मुझे इन के बेहतररीन शख़्स पर शर में मुब्तला

①..... صحيح المسلم، كتاب الايمان، باب بيان الدين النصيحة، الحديث: ٥٥، ص ٤٧.

②..... الترغيب والترهيب، كتاب البيوع، باب الترهيب من الغش والترغيب في..... الخ،

الحديث: ١٢، ج ٢، ص ٣٦١.

हो जाने का ख़ौफ़ है और इन के बुरे शख़्स के नेक हो जाने की उम्मीद भी है।”

﴿69﴾.....हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “तुम में से कोई भी उस वक़्त तक कामिल मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि वोह अपने मुसलमान भाई के लिये भी वोही पसन्द न करे जो अपने लिये पसन्द करता है।” (1)

﴿70﴾.....हज़रते सय्यिदुना मुअज़ रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने मीठे मीठे आक़ा, मक्की मदनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से अफ़ज़ल ईमान के मुतअल्लिक़ सुवाल किया तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “अफ़ज़ल ईमान येह है कि तू **اَعْرُوجْ لَ اَبِيهِ** की खातिर महबबत रखे और उसी की खातिर बुग़ रखे और तेरी ज़बान जिक्कुल्लाह से तर रहे।” फिर अर्ज़ की : “या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ इस के बा'द ?” इरशाद फ़रमाया : “लोगों के लिये वोही पसन्द करो जो अपने लिये करते हो और लोगों के लिये वोही नापसन्द करो जो अपने लिये नापसन्द करते हो और अच्छी बात करो या ख़ामोश रहो।” (2)

दिल की पाकीजगी और मुसलमानों के क़ीने से बचने की फ़ज़ीलत

﴿71﴾.....हज़रते सय्यिदुना अबू सईद खुदरी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने

①.....صحيح المسلم، كتاب الايمان، باب الدليل على ان من خصال.....الخ،

الحديث: ٤٥، ص ٤٢.

②.....المسند لامام احمد بن حنبل، حديث معاذين جبل، الحديث: ٢٢١٩٣، ج ٨، ص ٢٦٦.

इरशाद फ़रमाया : “मेरी उम्मत के अब्दाल जन्नत में (महज़) अपने आ'माल की बिना पर दाख़िल न होंगे बल्कि वोह **अब्बाह** **عَزَّوَجَلَّ** की रहमत, नफ़्स की सखावत, दिल की पाकीज़गी और तमाम मुसलमानों पर रहीम होने की वजह से जन्नत में दाख़िल होंगे।”⁽¹⁾

﴿72﴾.....हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** बयान करते हैं कि हम बारगाहे रिसालत में हाज़िर थे कि ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने इरशाद फ़रमाया : “इस रास्ते से तुम्हारे पास एक जन्नती शख़्स आएगा।” इतने में एक अन्सारी सहाबी आए जिन की दाढ़ी से वुजू का पानी टपक रहा था। उन्होंने ने अपने जूते बाएं हाथ में पकड़े हुवे थे। फिर उन्होंने ने सलाम किया। दूसरे दिन फिर आप **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने येही इरशाद फ़रमाया तो फिर वोही अन्सारी सहाबी पहले की तरह आए। तीसरे दिन भी ऐसा ही हुवा। जब आप **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** अपनी मजलिस से उठे तो हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अम्र **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** उन सहाबी के पीछे हो लिये और उन से कहने लगे : “**अब्बाह** **عَزَّوَجَلَّ** की क़सम मैं ने अपने वालिद से हया की है, मैं 3 दिन तक उन के पास नहीं जाऊंगा अगर आप मुनासिब समझें तो तीन दिन मुझे अपने पास ठहरने की इजाज़त अता फ़रमाएं।” अन्सारी सहाबी ने इजाज़त दे दी। हज़रते सय्यिदुना अनस **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अम्र **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ**

①.....کنز العمال، کتاب الفضائل، باب لحوق فی القطب والابدال، الحدیث: ۳۴۰۹۶

ने उन्हें बताया कि “मैं ने तीन रातें उन के साथ गुज़ारीं लेकिन उन्हें रात में इबादत करते न देखा। हां ! जब वोह अपने बिस्तर पर करवट लेते तो **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** का ज़िक्र और उस की क़िब्रियाई बयान करते यहां तक कि नमाज़े फ़ज़्र के लिये उठ खड़े होते।”

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** फ़रमाते हैं कि मैं ने अन्सारी सहाबी से अच्छी बात के इलावा कुछ न सुना। जब तीन दिन पूरे हुवे तो करीब था कि मैं उन के आ'माल को हकीर जानता लेकिन जब मैं ने उन अन्सारी सहाबी से कहा : “ऐ **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के बन्दे ! मेरे और मेरे वालिद के दरमियान कोई नाराज़ी और जुदाई नहीं है बल्कि मैं ने तो हुज़ूर नबिय्ये पाक **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** को तीन बार फ़रमाते सुना कि अभी तुम्हारे पास एक जन्नती शख़्स आएगा और तीनों बार आप ही आए। चुनान्चे, मैं ने पुख़्ता इरादा कर लिया कि मैं आप के पास ठहरूंगा और देखूंगा कि आप क्या अमल करते हैं ताकि मैं भी आप की पैरवी करूं। लेकिन मैं ने आप को कोई बड़ी इबादत करते नहीं देखा तो फिर आप कैसे इस बुलन्द मक़ाम तक पहुंचे कि हुज़ूर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने आप के मुतअल्लिक़ येह बात इरशाद फ़रमाई ?” अन्सारी सहाबी ने जवाब दिया : “और तो कोई अमल नहीं बस येही है जो आप ने देखा।” हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** फ़रमाते हैं कि येह बात सुन कर जब मैं वहां से चलने लगा तो अन्सारी सहाबी ने मुझे आवाज़ दी और कहा : “मेरा कोई और अमल नहीं बस येही है जो आप ने देखा। इस के इलावा मैं किसी भी मुसलमान के लिये अपने दिल में खोट नहीं पाता और जो **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** ने किसी को दिया है उस पर हसद नहीं करता।” हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अम्र **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** फ़रमाते हैं कि मैं ने उन से कहा : “येही वोह

अमल है जिस ने आप को रिफ़अतें बख़्शीं और हम इस की ताक़त नहीं रखते ।”(1)

﴿73﴾.....हज़रते सय्यिदुना मुअ़विyyा बिन कुरा रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि “लोगों में अफ़ज़ल तरीन वोह है जो उन में सब से पाकीजा सीने वाला और सब से ज़ियादा ग़ीबत से बचने वाला है ।”(2)

﴿74﴾.....हज़रते सय्यिदुना का'ब رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से पूछा गया कि “सोने वाला मग़फ़िरत याफ़ता और क़ियाम करने वाला मश्कूर कैसे होगा ?” आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : “एक शख़्स रात को क़ियाम करता है और अपने सोए हुवे भाई के लिये पीठ पीछे दुआ करता है तो **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ उस क़ियाम करने वाले की दुआ के सबब उस सोने वाले की मग़फ़िरत फ़रमा देता है और सोने वाले की ख़ैर ख़्वाही की वजह से क़ियाम करने वाला इस बात का मुस्तह़िक् होता है कि उस का शुक्रिय्या अदा किया जाए ।”

लोगों में सुल्ह क़राने की फ़ज़ीलत

﴿75﴾.....हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक़ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “क्या मैं तुम्हें दरजे के ए'तिबार से नमाज़, रोज़े और सदके से अफ़ज़ल अमल के बारे में न बताऊं ?” सहाबए किराम رَضُواْ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ ने अर्ज़ की : “क्यूं नहीं ।” आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “आपस के तअल्लुकात को

①.....المصنف لعبدالرزاق، كتاب العلم، باب الرخص والشدائد، الحديث: ٤٩٤٤،

ج ١٠، ص ٢٦٠.

②.....المصنف لابن ابى شيبة، كتاب الزهد، حديث ابى قلابه، الحديث: ٨، ج ٨، ص ٢٥٤.

अच्छ करो क्यूंकि ना इत्तिफ़ाकी दीन को मूंड देने वाली है।”(1)

अदापुगिये हुक्क़ की फ़ज़ीलत

﴿76﴾.....हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जिस ने अपनी ज़बान से कोई हक़ पूरा किया तो उस का अज़्र बढ़ता रहेगा हत्ता कि क़ियामत के दिन **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ उसे इस का पूरा पूरा सवाब अता फ़रमाएगा।”(2)

मज़लूम की मदद करने की फ़ज़ीलत

﴿77﴾.....हज़रते सय्यिदुना बरा बिन अज़िब رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे हबीब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने हमें मज़लूम की मदद करने का हुक्म दिया।”(3)

﴿78﴾.....हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “अपने भाई की मदद करो ख़्वाह ज़ालिम हो या मज़लूम।” मैं ने अज़्र की : “मैं मज़लूम की मदद तो कर सकता हूँ लेकिन ज़ालिम की मदद कैसे करूँ?” इरशाद फ़रमाया : “उसे जुल्म से रोको।”(4)

①.....سنن الترمذی، کتاب صفة القيامة، باب ٥٦، الحديث: ٢٥١٧، ج ٤، ص ٢٢٨.

②.....حلية الاولياء، الرقم ٣٩٩ عبد الله بن مبارك، الحديث: ١١٨٥١، ج ٨، ص ١٩٢.

③.....سنن الترمذی، کتاب الادب، باب ماجاء في كراهية ليس.....الخ، الحديث: ٢٨١٨، ج ٤، ص ٣٦٩.

④.....سنن الترمذی، کتاب الفتن، باب ٦٨، الحديث: ٢٢٦٢، ج ٤، ص ١١٢.

ज़ालिम को जुल्म से रोकने का बयान

﴿79﴾.....हज़रते सय्यिदुना कैस बिन अबी हाज़िम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ बयान करते हैं कि मैं ने अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ को येह फ़रमाते हुवे सुना कि ऐ लोगो ! तुम येह आयते मुबारका पढ़ते हो :

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا عَلَيْكُمْ
أَنْفُسُكُمْ لَا يَصْرُكُمْ مَنْ صَلَّى
إِذَا هَتَأْتَيْتُمْ^ط (المائدة: १००)

तर्जमए कन्जुल ईमान : ऐ ईमान
वालो ! तुम अपनी फ़िक्र रखो
तुम्हारा कुछ न बिगाड़ेगा जो गुमराह
हुवा जब कि तुम राह पर हो ।

(फिर फ़रमाया) मैं ने सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को इरशाद फ़रमाते सुना कि “जब लोग ज़ालिम को देखें और उसे जुल्म से न रोके तो क़रीब है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन सब पर अज़ाब भेजे ।”⁽¹⁾

﴿80﴾.....हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अम्म رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि दो जहां के ताजवर, सुलताने बहूरो बर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जब तुम देखो कि मेरी उम्मत ज़ालिम की ता’जीम कर रही है तो तुम्हारा ज़ालिम को ज़ालिम कहना तुम्हें उन से जुदा कर देगा ।”⁽²⁾

नादान को रोकने का बयान

﴿81﴾.....हज़रते सय्यिदुना नो’मान बिन बशीर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रहूमतुल्लिलल आलमीन صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : अपने नादानों

①..... سنن الترمذی، کتاب التفسیر، باب سورة مائده، الحدیث: ۳۰۶۸، ج ۵، ص ۴۱.

②..... المستنللام احمد بن حنبل مسند عبد الله بن عمرو، الحدیث: ۶۷۹۸، ج ۲، ص ۶۲۱.

को रोके रखो।” (1) (2)

मुसलमानों की मदद और इन की ज़रूरत पूरी करने की फ़ज़ीलत

﴿82﴾.....हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से रिवायत है कि शफ़ीउल मुजनिबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “कुछ लोग ऐसे हैं जिन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने लोगों की हाज़तें पूरी करने के लिये पैदा फ़रमाया है। लोग हाज़त के वक़्त उन की तरफ़ रुजूअ करते हैं। येही वोह लोग हैं जो कियामत के दिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अज़ाब से महफूज़ होंगे।” (3)

﴿83﴾.....हज़रते सय्यिदुना सहल बिन सा'द رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब दानाए गुयूब, मुनज़ज़हुन अनिल उयूब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “ख़ैर और शर के ख़ज़ाने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के पास हैं और इन की चाबियां इन्सान हैं। उस शख़्स के लिये खुश ख़बरी है जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ख़ैर की चाबी और शर के लिये ताला बनाया और हलाकत है उस

①....हज़रते सय्यिदुना अब्दुररुफ़ मनावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَاسِعَةُ इस हदीसे मुबारका के तहत फ़रमाते हैं कि “इस में ख़िताब सर परस्त को है कि वोह अपने ना समझा मा तहत को फुज़ूल ख़र्ची से रोके।”

(فيض القدير للمناوي، تحت الحديث: ٣٨٩٤، ج ٣، ص ٥٧٩، ملخصاً)

②.....شعب الإيمان لليبيهي، باب احاديث في الامر بالمعروف والنهي عن المنكر،

الحديث: ٧٥٧٧، ج ٦، ص ٩٢.

③.....المعجم الكبير، الحديث: ١٣٣٣٤، ج ١٢، ص ٢٧٤.

के लिये जिसे शर की चाबी और ख़ैर के लिये ताला बनाया।” (1)

﴿84﴾.....हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से रिवायत है कि हुस्ने अख़्लाक के पैकर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया कि **اللَّهُ** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : “मैं रब हूँ। मैं ने ख़ैर व शर को मुक़द्दर फ़रमा दिया है। खुश ख़बरी है उस के लिये जिस के हाथ में ख़ैर की चाबी है और ख़राबी है उस के लिये जिस के हाथ में शर की चाबी है।” (2)

﴿85﴾.....हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जिस ने किसी मोमिन से तकलीफ़ व मुसीबत को दूर किया **اللَّهُ** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये पुल सिरात पर नूर के दो ऐसे हिस्से पैदा फ़रमाएगा जिन की रोशनी से इतनी मख़्लूक़ रोशनी हासिल करेगी जिन की ता'दाद **اللَّهُ** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई नहीं जानता।” (3)

﴿86﴾.....हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि सय्यिदे अलम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जो शख़्स किसी मुसलमान की दुन्यावी मुसीबत दूर करेगा **اللَّهُ** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत में उस की मुसीबत दूर फ़रमाएगा और जो किसी मुसलमान के ऐब छुपाएगा **اللَّهُ** عَزَّوَجَلَّ दुन्या व आख़िरत में उस के उयूब छुपाएगा और **اللَّهُ** عَزَّوَجَلَّ उस

①.....المعجم الكبير، الحديث: ٥٨١٢، ج ٦، ص ١٥٠.

②.....الدر المنثور، سورة الانبياء، تحت الآية: ٢١، ج ٥، ص ٦٢٢.

③.....المعجم الاوسط، الحديث: ٤٥٠٤، ج ٣، ص ٢٥٤.

वक्त तक बन्दे की मदद करता रहता है जब तक वोह अपने मुसलमान भाई की मदद करता रहता है।”(1)

﴿87﴾.....हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “मख़्लूक **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ की परवर्दा है (या’नी तमाम मख़्लूक को वोही पालने वाला है) और **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ को अपनी मख़्लूक में सब से ज़ियादा महबूब वोह है जो उस के परवर्दा को सब से ज़ियादा फ़ाइदा पहुंचाए।”(2)

﴿88﴾.....हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जिस ने मुसलमान भाई की हाज़त रवाई की गोया उस ने सारी उम्र **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ की इबादत की।”(3)

﴿89﴾....हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अशअरी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “एक मोमिन दूसरे मोमिन के लिये इमारत की तरह है जिस का बा’ज़ हिस्सा बा’ज़ को तकविय्यत पहुंचाता है।”(4)

﴿90﴾....हज़रते सय्यिदुना नो’मान बिन बशीर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “मोअमिनीन की आपस में रहूम, महबूबत और

①.....صحيح المسلم، كتاب الذكرو الدعاء، باب فضل الاجتماع على تلاوة.....الخ،

الحديث: ٢٦٩٩، ص ١٤٤٧.

②.....المسندلابي يعلى الموصلي، الحديث: ٣٤٦٥، ج ٣، ص ٢٣٢.

③.....الفردوس بماثور الخطاب، باب الميم، الحديث: ٦١١١، ج ٢، ص ٢٨٦.

④.....صحيح البخاري، كتاب المظالم والغضب، باب نصر المظلوم، الحديث: ٢٤٤٦،

ج ٢، ص ١٢٧.

सिलए रेहमी करने की मिसाल एक जिस्म की सी है कि जब उस के किसी उज़्ब को तक्लीफ़ पहुंचती है तो पूरा जिस्म बुख़ार और बे ख़्वाबी का शिकार हो जाता है।”(1)

हज़रते सय्यिदुना सुलैमान बिन अहमद त़बरानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي फ़रमाते हैं कि मैं ख़्वाब में हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ज़ियारत से मुशर्रफ़ हुवा तो मैं ने इस (मजकूर) हदीस के मुतअल्लिक पूछा तो आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने तीन बार हाथ का इशारा कर के फ़रमाया : “येह सहीह है।”

﴿91﴾.....हज़रते सय्यिदुना अबू हरैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि एक शख़्स ने बारगाहे रिसालत में अर्ज की : “या रसूलल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ कौन सा अमल अफ़ज़ल है ?” आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “तुम्हारा अपने मुसलमान भाई को खुश करना या उस का कर्ज अदा कर देना या उसे खाना खिलाना।”(2)

﴿92﴾.....हज़रते सय्यिदुना अबू हरैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि सरकारे मदीना, करारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “मोमिन मोमिन का आईना है। मोमिन मोमिन का भाई है। जहां भी मिले उसे नुक़सान से बचाता और पीठ पीछे उस की हिफ़ाज़त करता है।”(3)

①..... شرح السنة للبعغوى، كتاب البر والصلة، باب تعاون المؤمن وتراحمهم،

الحديث: ٣٣٥٣، ج ٦، ص ٤٥٣.

②..... شعب الايمان للبيهقى، باب فى التعاون على البر والتقوى، الحديث: ٧٦٧٨،

ج ٦، ص ١٢٣.

③..... سنن ابى داؤد، كتاب الادب، باب فى النصيحة والحيطة، الحديث: ٤٩١٨،

ج ٤، ص ٣٦٥.

﴿93﴾.....हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से रिवायत है कि एक दिन मीठे मीठे आका, मक्की मदनी मुस्तफ़ा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से सहाबए किराम أَجْمَعِينَ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इस्तिफ़सार फ़रमाया कि “मुझे ऐसे दरख़्त के बारे में बताओ जो मुसलमान मर्द के मुशाबेह होता है और उस के पत्ते नहीं गिरते वोह अपने रब के हुक्म से हर वक़्त फल देता है।” हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं कि मेरे दिल में ख़याल आया कि हो न हो येह ख़जूर का दरख़्त है लेकिन मैं ने अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ और अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا की मौजूदगी में बोलना मुनासिब ख़याल न किया। जब वोह दोनों भी न बोले तो हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने खुद ही इरशाद फ़रमाया कि “वोह ख़जूर का दरख़्त है।” (1)

﴿94﴾.....हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जो किसी मोमिन की मेहमान नवाजी करे या उस की हाजात को उस पर आसान कर दे तो **अब्ब्लाह** عَزَّوَجَلَّ के जिम्माए करम पर है कि जन्नत में उसे खुद्दाम अता करे।” (2)

किसी की परेशानी दूर करने की फ़ज़ीलत

﴿95﴾.....हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, माहे नबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

1.....مسندالبيزار،مسندعبداللّه بن عباس،الحديث: ٥٧١٤، ج ٢، ص ٢٣٦.

2.....حليةالالياء،يزيدبن ابان رقاشي،الحديث: ٣١٧٣، ج ٣، ص ٦٢.

من اضاف مؤمنا بدله من خدم مؤمنا.

ने इरशाद फ़रमाया : “बेशक **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** परेशान हालां की मदद करने को पसन्द फ़रमाता है ।”⁽¹⁾

﴿96﴾...हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने इरशाद फ़रमाया : “जो किसी ग़मज़दा की दस्तग़ीरी करता है **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** उस के लिये 73 नेकियां लिखता है । एक नेकी से **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** उस की दुन्या व आख़िरत को संवारता और बाक़ी नेकियां उस के लिये दरजात की बुलन्दी का सबब बनती हैं ।”⁽²⁾

﴿97﴾.....हज़रते सय्यिदुना अबू सईद खुदरी **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** बयान करते हैं कि एक मरतबा हम सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के शरीके सफ़र थे कि एक शख़्स कमज़ोर सी सुवारी पर सुवार हो कर आया और उस ने अपनी सुवारी को दाएं बाएं घुमाना शुरूअ कर दिया, आप **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने इरशाद फ़रमाया : “जिस के पास जाइद सुवारी हो वोह उसे दे दे जिस के पास सुवारी नहीं और जिस के पास बची हुई ख़ूराक हो वोह उसे खिला दे जिस के पास ख़ूराक नहीं ।” इसी तरह माल की मुख़लिफ़ अक़्साम जि़क्र फ़रमाई हत्ता कि हम ने महसूस किया कि बची हुई चीज़ में से किसी को अपने पास रख लेने का हक़ ही नहीं है ।⁽³⁾

﴿98﴾.....हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** बयान करते हैं कि मैं ने बारगाहे रिसालत में अर्ज़ की :

①.....المستدلابي يعلى الموصلي، حديث سعد بن سنان عن انس بالحديث: ٤٢٨٠، ج ٣، ص ٤٥٢.

②.....المستدلابي يعلى الموصلي، حديث سعد بن سنان عن انس بالحديث: ٤٢٥٠، ج ٣، ص ٤٤٥.

③.....سنن ابى داؤد، كتاب الزكوة، باب فى حقوق المال، بالحديث: ١٦٦٣، ج ٢، ص ١٧٥.

“या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ बन्दे को कौन सी चीज़ दोज़ख़ से नजात दिलवाएगी ?” इरशाद फ़रमाया : “**اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ पर ईमान लाना ।” मैं ने अर्ज़ की : “क्या ईमान के साथ कोई अमल भी है ?” इरशाद फ़रमाया : “बन्दे को जो **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ ने रिज़क़ दिया है उस में से कुछ न कुछ सदक़ा करता रहे ।” मैं ने अर्ज़ की : “अगर वोह फ़कीर हो कि देने के लिये कुछ न पाता हो तो ?” इरशाद फ़रमाया : “वोह नेकी की दा’वत दे और बुराई से मन्अ करे ।”

मैं ने अर्ज़ की : “या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ अगर वोह अच्छे तरीके से गुफ़्तगू न कर सकता हो कि नेकी की दा’वत दे और बुराई से मन्अ करे तो ?” इरशाद फ़रमाया : “किसी जाहिल के साथ कोई नेकी कर दे ।” मैं ने अर्ज़ की : “अगर वोह खुद जाहिल हो किसी के साथ भलाई न कर सकता हो तो ?” इरशाद फ़रमाया : “वोह मग़लूब की मदद करे ।” फिर इरशाद फ़रमाया : “क्या तुम अपने भाई में कोई भलाई नहीं छोड़ना चाहते कि लोगों से अज़ियत को दूर कर दे ?” मैं ने अर्ज़ की : “या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ क्या ऐसा करने वाला जन्नत में दाख़िल हो जाएगा ?” इरशाद फ़रमाया : “जो मोमिन या मुसलमान इन ख़स्लतों में से कोई ख़स्लत अपनाएगा मैं उस का हाथ पकड़ कर उसे जन्नत में दाख़िल कर दूंगा ।”⁽¹⁾

कमजोरों की कफ़ालत करने की फ़ज़ीलत

﴿99﴾.....हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे हबीब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “बेवा और मिस्कीन की कफ़ालत के लिये कोशिश करने वाला

①.....المعجم الكبير، الحديث: ١٦٥٠، ج ٢، ص ١٥٦.

﴿1﴾ "अल्लाह ﷻ की राह में जिहाद करने वाले की तरह है।"

﴿100﴾.....हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رضي الله تعالى عنه से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صلى الله تعالى عليه وآله وسلم ने इरशाद फ़रमाया : "बेवा और मिस्कीन की कफ़ालत के लिये कोशिश करने वाला अल्लाह ﷻ की राह में जिहाद करने वाले मुजाहिद या उस शख़्स की तरह है जो दिन को रोज़ा रखता और रात को क़ियाम करता है।" (2)

﴿101﴾.....हज़रते सय्यिदुना जाबिर رضي الله تعالى عنه से रिवायत है कि सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم ने इरशाद फ़रमाया : "जिस ने (किसी मुसलमान मुर्दे के लिये) क़ब्र खोदी अल्लाह ﷻ जन्नत में उस के लिये घर बनाएगा और उसे क़ियामत तक इस का अज़्र मिलता रहेगा....., जिस ने मय्यित को गुस्ल दिया वोह गुनाहों से ऐसे पाक साफ़ हो कर निकलता है जैसा कि उस दिन था कि जिस दिन उस की मां ने उसे जना था....., जिस ने मय्यित को क़फ़न पहनाया अल्लाह ﷻ उसे मय्यित के कपड़ों की ता'दाद के बराबर जन्नती लिबास पहनाएगा....., जिस ने किसी ग़मज़दा को तसल्ली दी अल्लाह ﷻ उसे तक्वा का लिबास पहनाएगा और (जब वोह फ़ौत होगा तो) अरवाह में उस की रूह पर रहमत नाज़िल फ़रमाएगा,.....जिस ने किसी मुसीबत ज़दा को तसल्ली दी अल्लाह ﷻ उसे ऐसे दो जन्नती हुल्ले अता फ़रमाएगा कि जिन की कीमत सारी दुन्या भी नहीं हो सकती,

①.....صحيح البخارى، كتاب النفقات، باب فضل النفقة على الاهل، الحديث: ٥٣٥٣،

ج ٣، ص ٥١١.

②.....المسند للإمام احمد بن حنبل، مسند ابى هريره، الحديث: ٨٧٤٠، ج ٣، ص ٢٨٥.

जो जनाज़े के पीछे चला यहां तक कि तदफ़ीन मुकम्मल हो गई तो **اَللّٰهُمَّ** **عَزَّوَجَلَّ** उस के लिये तीन क़ीरात अज़्र लिखेगा और एक क़ीरात उहुद पहाड़ से बड़ा है...., जिस ने किसी यतीम या बेवा की कफ़ालत की **اَللّٰهُمَّ** **عَزَّوَجَلَّ** उसे अर्श के साए में जगह अता फ़रमाएगा और उसे अपनी जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा....., जो रोज़ा रखे या मिस्कीन को खाना खिलाए और जनाज़े के साथ चले और मरीज़ की इयादत करे तो उसे कोई गुनाह न पहुंचेगा।”⁽¹⁾

यतीमों की कफ़ालत करने की फ़ज़ीलत

﴿102﴾.....हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान बिन उयैना رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ से मरवी है कि दो जहां के ताजवर सुल्ताने बहुरो बर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “मैं और यतीम की कफ़ालत करने वाला ख़्वाह वोह यतीम रिश्तेदार हो या अजनबी जन्नत में ऐसे होंगे।” इस के बा’द हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान बिन उयैना رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने अपने हाथ की उंगलियों से इशारा किया।⁽²⁾

﴿103﴾.....हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रहूमतुल्लिल अलमीन صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “मुसलमानों के घरों में सब से अच्छा घर वोह है जिस में यतीम के साथ अच्छा सुलूक किया जाता है और मुसलमानों के घरों में से बदतरीन घर वोह है जिस में यतीम के साथ बद सुलूकी की जाती है।” फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “मैं और यतीम

①.....المعجم الاوسط، الحديث: ٩٢٩٢، ج ٦، ص ٤٢٩، بلون اجرى له.....الى..... يوم القيامة.

②.....الادب المفرد، باب فضل من يعول يتيمًا بين ابويه، الحديث: ١٣٣، ص ٥٨.

की कफ़ालत करने वाला जन्नत में ऐसे होंगे।” फिर शहादत और दरमियान की उंगली को जम्अ फ़रमा दिया।⁽¹⁾

﴿104﴾.....हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अशअरी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि शफ़ीउल मुजनिबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जिस दस्तरख़्वान पर यतीम हो शैतान उस दस्तरख़्वान के क़रीब नहीं जाता।”⁽²⁾

﴿105﴾.....हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्जहुन अनिल उयूब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “उस ज़ात की क़सम जिस ने मुझे हक़ के साथ मबऊस फ़रमाया ! **اَللّٰهُ** क़ियामत के दिन उस शख़्स को अज़ाब न देगा जिस ने यतीम पर रहूम किया और उस के साथ नर्मी से पेश आया और उस की यतीमी और जईफ़ी पर रहूम किया और **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ ने अपने फ़ज़ल से उसे जो वाफ़िर माल अता फ़रमाया इस के सबब अपने पड़ोसी पर तकब्बुर न किया।”⁽³⁾

﴿106﴾.....हज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि हुस्ने अख़लाक़ के पैकर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जो किसी यतीम के सर पर हाथ फेरता है **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ उसे हर बाल के बदले एक नेकी अता फ़रमाता है और जिस की कफ़ालत में यतीम लड़का या लड़की हो ख़्वाह वोह

①.....الادب المفرد، باب حيريت بيت فيه.....الخ، الحديث: ١٣٧، ص ٥٨.

②.....مجمع الزوائد، كتاب البر والصلة، باب ما جاء في الايتام والارامل والمساكين،

الحديث: ١٣٥١٢، ج ٨، ص ٢٩٣، مفهوماً.

③.....المعجم الاوسط، الحديث: ٨٨٢٨، ج ٦، ص ٢٩٦.

यतीम रिश्तेदार हो या अजनबी तो मैं और वोह जन्नत में इस तरह होंगे।” फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने अंगूठे और शहादत की उंगली को मिला दिया।”(1)

﴿107﴾.....हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि एक शख्स ने बारगाहे रिसालत में दिल की सख़्ती की शिकायत की तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “अगर तुम अपने दिल को नर्म करना चाहते हो तो मिस्कीनों को खाना खिलाओ और यतीमों के सरों पर शफ़क़त से हाथ फेरो।”(2)

﴿108﴾.....हज़रते सय्यिदुना मालिक बिन अम्र कुशैरी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि ख़ातमुल मुर्सलीन, रहूमतुल्लिल अलमीन صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जो किसी मुसलमान यतीम की कफ़ालत करे यहां तक कि वोह यतीम उस से बे नियाज़ हो जाए तो **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ यकीनन उस के लिये जन्नत वाजिब फ़रमा देता है।”(3)

﴿109﴾.....हज़रते सय्यिदुना जबर अन्सारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि एक लड़के ने सरकारे वाला तबार हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को मस्जिद में देखा तो अर्ज़ की : “या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ आप पर सलाम हो। मैं एक यतीम मिस्कीन लड़का हूँ और मेरी ग़रीब व मोहताज वालिदा है जो कुछ **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ को अ़ता फ़रमाया है उस में से थोड़ा सा हमें भी अ़ता फ़रमाइये !

1..... شعب الایمان للبيهقي، باب فی رحم الصغیر و توفیر الکبیر، الحدیث: ۱۱۰۳۶، ج ۷، ص ۴۷۲، بتغییر قلیلی.

2..... شعب الایمان للبيهقي، باب فی رحم الصغیر و توفیر الکبیر، الحدیث: ۱۱۰۳۴، ج ۷، ص ۴۷۲.

3..... المعجم الکبیر، الحدیث: ۶۶۹-۶۷۰، ج ۱۹، ص ۳۰۰.

अल्लाह ﷺ आप की रिज़ा चाहता है यहां तक कि आप राज़ी हो जाएं।” हुज़ूर नबिय्ये पाक ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : “ऐ लड़के अपनी बात दोहराओ तुम्हारी ज़बान पर तो फ़िरिश्ता बोलता है।” उस ने अपने कलाम को दोहराया। फिर आप ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : “जो कुछ आले रसूल के घर में है ले आओ।”

चुनान्चे, एक लप (अनाज वगैरा का) पेश किया गया जो एक मुठ्ठी से ज़ियादा और दो से कम था। आप ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : “ऐ लड़के ! येह ले जाओ ! इस में तुम्हारे और तुम्हारी वालिदा और बहन के लिये दोपहर और रात का खाना है। मैं इस में बरकत की दुआ से तुम्हारी मदद करता रहूंगा।” चुनान्चे, वोह लड़का वहां से रुख़्सत हो कर जब मस्जिद के दरवाज़े पर पहुंचा तो उस का सामना हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक्कास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से हुवा, आप ने उस के सर पर दस्ते शफ़क़त फेरा। रावी फ़रमाते हैं : येह मा'लूम नहीं कि आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने उसे कुछ अ़ता किया या नहीं ? जब आप रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुवे तो हुज़ूर सरवरे कौनैन ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : “जब तुम यतीम से मिले थे, क्या मैं ने तुम्हें उस के सर पर हाथ फेरते नहीं देखा ?” हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक्कास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अ़र्ज की : “क्यूं नहीं !” आप ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : “जिस बाल पर तुम्हारा हाथ गुज़रा उस के बदले में तुम्हारे लिये नेकी है।”

इस हदीस से मा'लूम हुवा कि यतीम के सर पर हाथ फेरना मुस्तहब है।

ला वारिश बच्चों की तर्बियत और इन के बड़े होने तक इन पर खर्च करने की फ़ज़ीलत

﴿110﴾.....उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना अइशा सिद्दीका رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا से रिवायत है कि सय्यिदे आलम नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जिस ने किसी बच्चे की परवारिश की यहां तक कि वोह لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ कहना शुरू कर दे तो **अब्बाह** उस शख़्स से हिसाब न लेगा।” (1) (2)

हुस्ने शुलूक की फ़ज़ीलत

﴿111﴾....हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन यज़ीद ख़तमी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि रहमते आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “हर भलाई सदका है।” (3)

﴿112﴾.....हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मसऊद رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “हर भलाई सदका है ख़्वाह ग़नी के साथ हो या फ़कीर के साथ।” (4)

①.....हज़रते सय्यिदुना अब्दुररऊफ़ मनावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي इस हदीसे मुबारका के तहूत फ़रमाते हैं कि “येह हदीस अपनी अवलाद और ग़ैर की यतीम अवलाद वग़ैरा सब को शामिल है।” (فيض القدير، تحت الحديث: ٨١٩٦، ج ٦، ص ١٧٤)

②.....المعجم الاوسط، الحديث: ٤٨٦٥، ج ٣، ص ٣٧٠.

③.....المستدلل امام احمد بن حنبل، حديث عبد الله بن يزيد خطمي انصاري،

الحديث: ١٨٧٦٦، ج ٦، ص ٤٥٤.

④.....المعجم الكبير، الحديث: ٤٧، ج ١٠، ص ٩٠.

﴿113﴾.....हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अशअरी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “नेकी और बदी को लोगों के लिये पैदा किया गया है । बरोजे क़ियामत इन्हें खड़ा किया जाएगा । नेकी अपने करने वालों को बिशारतें देगी और उन से भलाई का वा'दा करेगी जब कि बुराई कहेगी दूर हो जाओ मगर वोह इस की ताक़त नहीं रखेंगे बल्कि बुराई के साथ चिमटेंगे ।”(1)

﴿114﴾.....हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “दुन्या में नेकी करने वाले आख़िरत में भी नेकी वाले होंगे और दुन्या में बुराई करने वाले आख़िरत में भी बुराई वाले होंगे ।”(2)

﴿115﴾.....हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “तुम्हें मा'लूम है शेर धहाड़ते वक़्त क्या कहता है ?” सहाबए किराम رَضُواْنَ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ ने अज़र्ज़ की : “**اَللّٰهُ** और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ बेहतर जानते हैं ।” आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “शेर कहता है : ऐ **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ मुझे किसी नेक शख़्स पर मुसल्लत न फ़रमाना ।”(3)

①.....المسند للإمام احمد بن حنبل، حديث ابى موسى اشعري، الحديث: ٤، ١٩٥٠.

ج ٧، ص ١٢٣.

②.....المعجم الاوسط، الحديث: ١٥٦، ج ١، ص ١٥٦.

③.....الفردوس بمانور الخطاب، باب التاء، الحديث: ٢١٥٥، ج ١، ص ٢٩٧.

﴿116﴾.....हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अब्दुल्लाह رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि सरकारे मदीना, करारे क़ब्लो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “सदका अगर्चे 70 हज़ार हाथों में से गुज़रे तो भी आख़िरी शख़्स का अज़्र पहले सदका करने वाले के बराबर होगा।” (1)

﴿117﴾.....हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि मीठे मीठे आका, मक्की मदनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “हर रोज़ तुलूए आफ़ताब के बा’द इन्सान के हर जोड़ पर सदका है। अगर तुम दो बन्दों के दरमियान इन्साफ़ से फ़ैसला करो तो येह सदका है। अगर तुम सुवारी पर सुवार होने में किसी की मदद करो तो येह भी सदका है। अगर किसी का सामान सुवारी पर रखवा दो तो येह भी सदका है। अच्छी बात करना भी सदका है। हर क़दम जो नमाज़ की तरफ़ उठे सदका है और रास्ते से तक्लीफ़ देह चीज़ हटा देना भी सदका है।” (2)

﴿118﴾.....हज़रते सय्यिदुना उबय्य बिन का’ब رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि शहनशाहे मदीना, करारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मेरे क़रीब से गुज़रे, मेरे साथ एक शख़्स था। आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने दरयाफ़्त फ़रमाया : “ऐ उबय्य ! येह कौन है ?” मैं ने अज़र्ज की : “येह मेरा मकरूज़ है। मैं इस से क़र्ज का तकाज़ा कर रहा हूँ।” आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “ऐ उबय्य ! इस से अच्छा सुलूक करो।” येह फ़रमाने के बा’द आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ अपने किसी काम से तशरीफ़ ले गए। जब दोबारा मेरे पास

①.....الفردوس بماثور الخطاب، باب اللام، فصل لو، الحديث: ٥١٢٨، ج ٢، ص ١٩٩.

②.....صحيح المسلم، كتاب الزكوة، باب بيان ان اسم الصلقة.....الخ، الحديث: ١٠٠٩،

से गुज़रे तो वोह शख़्स मेरे साथ न था। इस्तिफ़सार फ़रमाया :
 “ऐ उबय्य ! तुम ने अपने मकरूज़ भाई के साथ क्या सुलूक किया ?” मैं ने अर्ज़ की : “या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ वोह कर्ज़ अदा नहीं कर सकता था। चुनान्वे, मैं ने अपने माल का एक तिहाई हिस्सा **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ की खातिर, एक तिहाई आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की खातिर और बाकी एक तिहाई **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ से मुझे अक़ीदए तौहीद की तौफ़ीक़ मिलने के सबब मुआफ़ कर दिया।” आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने (खुश हो कर) तीन बार इरशाद फ़रमाया : “**اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ तुम पर रहम करे हमें इसी चीज़ का हुक्म दिया गया है।”

फिर इरशाद फ़रमाया : “ऐ उबय्य ! बेशक **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ ने अपनी मख़्लूक में से कुछ लोगों को भलाई का सबब बनाया है। भलाई और भलाई के कामों को उन का महबूब बना दिया। भलाई के हरीसों पर भलाई का त़लब करना आसान फ़रमा दिया और उन पर अ़ता की बारिश बरसाई। लिहाज़ा ख़ैर त़लब करने वालों की मिसाल उस बारिश की सी है जो **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ ने बन्जर व क़हूत ज़दा ज़मीन पर बरसाई इस के सबब से ज़मीन और अहले ज़मीन को ज़िन्दगी बख़्शी और बेशक **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ ने मख़्लूक में अच्छाई के दुश्मन भी पैदा फ़रमाए हैं। फिर भलाई और भलाई के कामों को उन के लिये नापसन्दीदा बना दिया और उन्हें भलाई त़लब करने से रोक दिया उन की मिसाल उस बारिश की सी है जिसे **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ ने क़हूत ज़दा ज़मीन पर बरसने से रोक दिया और इस के सबब ज़मीन और अहले ज़मीन को हलाक़ फ़रमा दिया।” (1)

①..... الموسوعة لابن ابي الدنيا، كتاب قضاء الحوائج، باب في فضل المعروف،

الحديث: ٤، ج ٤، ص ١٤١.

अच्छे आ'माल करने की फ़ज़ीलत

﴿119﴾.....हज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे हुस्ने अख़लाक़ और अच्छे आ'माल को कमाल तक पहुंचाने के लिये मबरुस फ़रमाया है।” (1)

﴿120﴾.....हज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि हुजूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक़ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अच्छे और आ'ला कामों को पसन्द और बुरे कामों को नापसन्द फ़रमाता है।” (2)

﴿121﴾.....हज़रते सय्यिदुना इस्मान बिन अफ़फ़ान رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये 117 अख़लाक़ हैं। जो बन्दा इन में से किसी एक को अपनाएगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे ज़रूर जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा।” (3)

﴿122﴾.....हज़रते सय्यिदुना अबू सईद खुदरी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे हबीब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुजूर एक लौह है जिस पर 315 अख़लाक़ हैं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है जो इन में से किसी एक पर अमल करे और मेरे साथ किसी को

①.....المجم الاوسط، الحديث: ٦٨٠٥، ج ٥، ص ١٥٣.

②.....شعب الايمان للبيهقي، باب في حسن الخلق، الحديث: ٨٠١٢، ج ٦، ص ٢٤١.

③.....مسند ابى داؤد طيالسي، الجزء الاول، حديث عثمان بن عفان، ص ١٤.

शरीक न ठहराए तो मैं उसे जन्नत में दाख़िल करूंगा।” (1)

﴿123﴾..... मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “ईमान के 333 अवसाफ़ हैं। जो इन में से किसी एक पर भी अमल करेगा जन्नत में दाख़िल होगा।” (2)

मुसलमान पर जुल्म करने की मजम्मत

﴿124﴾..... हज़रते सय्यिदुना उ़क्बा बिन अ़मिर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारो मदीनए मुनव्वरा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जब तुम देखो कि **اَللّٰهُ** किसी बन्दे को गुनाहों के बा वुजूद (ने’मते) अ़ता फ़रमा रहा है तो येह **اَللّٰهُ** की तरफ़ से उस के लिये ढील (या’नी मोहलत) है।” फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने येह आयाते मुबारका तिलावत फ़रमाई :

فَلَمَّا نَسُوا مَا ذُكِّرُوا بِهِ
فَتَحَّصَّ عَلَيْهِمُ ابْوَابُ كُلِّ
شَيْءٍ حَتَّىٰ اِذَا قَرِحُوا بِهَا
اُوتُوْا اَحَدٌ نُّهْمٌ بَعْتَةٌ فَاِذَا
هُم مُّبْلِسُوْنَ ﴿٣٧﴾ فَقَطَعَ
دَايِرُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ

तरज्मए कन्ज़ुल ईमान : फिर जब
उन्हों ने भुला दिया जो नसीहतें उन
को की गई थीं हम ने उन पर हर
चीज़ के दरवाज़े खोल दिये। यहां
तक कि जब खुश हुवे उस पर जो
उन्हें मिला तो हम ने अचानक उन्हें
पकड़ लिया अब वोह आस टूटे रह

①.....عمدة القارى شرح صحيح البخارى، كتاب الايمان، باب امور الايمان،

تحت الحديث: ٩، ج ١، ص ١٩٦.

②.....معرفة الصحابة لابی نعیم، الرقم ١٩٤٣ عبيد ابو عبد الرحمن، الحديث: ٤٨٠٦،

ج ٣، ص ٣٢٨.

ظَلَمُوا وَالْحَصْدُ لِلَّهِ رَبِّ

الْعَالَمِينَ ﴿١٣﴾ (پ ۷، الانعام: ۴۰، ۴۱)

गए तो जड़ काट दी गई ज़ालिमों
की और सब ख़ूबियों सराहा
अल्लाह रब सारे जहां का । (1)

﴿125﴾.....हज़रते सय्यिदुना अम्मार बिन यासिर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि “अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रहमत से मायूस होना उस की मदद से ना उम्मीद होना और उस की खुफ़या तदबीर से बे ख़ौफ़ होना बड़े कबीरा गुनाहों में से है ।” (2)

﴿126﴾.....हज़रते सय्यिदुना ख़ुजैमा बिन साबित رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहुरो बर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : मज़लूम की बद दुआ से बचो कि येह आस्मानों पर उठाई जाती है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : “(ऐ मज़लूम!) मुझे अपनी इज़्जतो जलाल की क़सम मैं तेरी मदद ज़रूर करूंगा अगर्चे कुछ ताख़ीर से हो ।” (3)

﴿127﴾.....हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रहूमतुल्लिल अलमीन صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “मज़लूम की बद दुआ से बचो अगर्चे वोह काफ़िर ही क्यूं न हो क्यूंकि उस का कुफ़्र तो उस की अपनी जान पर है ।” (4)

1.....المستدلل امام احمد بن حنبل، حديث عقبه بن عامر جهني، الحديث: ۱۷۳۱۳،

ج ۶، ص ۱۲۲.

2.....شعب الايمان للبيهقي، باب في الرجامن الله، الحديث: ۱۰۵۰، ج ۲، ص ۲۰.

3.....المعجم الكبير، الحديث: ۳۷۱۸، ج ۴، ص ۸۴.

4.....الترغيب والترهيب، كتاب القضاء، باب الترهيب من الظلم.....الخ، الحديث: ۳۴۱۵،

ج ۳، ص ۱۴۲، بتغير قليل.

﴿128﴾.....हज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि शफ़ीउल मुज़निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जुल्म बरोज़े क़ियामत अन्धेरा होगा ।” (1)

﴿129﴾.....हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि **اللَّهُ** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया कि “तुम्हारा रब عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : “मुझे अपनी इज़्ज़तो जलाल की क़सम मैं ज़ालिम से ज़रूर बदला लूंगा जल्द या ताख़ीर से और उस से भी ज़रूर इन्तिक़ाम लूंगा जिस ने मज़लूम को देखा लेकिन बा वुजूदे कुदरत उस की मदद न की ।” (2)

मुसलमान भाई की जाइज़ सिफ़ारिश करने की फ़ज़ीलत

﴿130﴾....हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अशअरी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि हुस्ने अख़लाक़ के पैकर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जब कोई हाजत मन्द आए तो उस की सिफ़ारिश किया करो ताकि तुम्हें अज़्र मिले और **اللَّهُ** عَزَّوَجَلَّ जो चाहे अपने नबी की ज़बान से फ़ैसला जारी करवाए ।” (3)

﴿131﴾.....हज़रते सय्यिदुना समुरह बिन जुन्दब رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि ख़ातमुल मुर्सलीन, रहूमतुल्लिल अलमीन صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “सब से अफ़ज़ल सदक़ा

①.....صحيح المسلم، كتاب البر والصلة، باب تحريم الظلم، الحديث: ٢٥٧٨، ص ١٣٩٤.

②.....المعجم الاوسط، الحديث: ٣٦، ج ١، ص ٢٠.

③.....صحيح البخارى، كتاب الزكوة، باب التحريض على الصدقة والشفاعة فيها،

الحديث: ١٤٣٢، ج ١، ص ٤٨٣.

ज़बान का सदका है।” सहाबए किराम رَضَوْنَ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ
ने अर्ज़ की : “या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ज़बान का सदका
क्या है?” इरशाद फ़रमाया : “तुम्हारी वोह सिफ़ारिश जिस से
किसी कैदी को रिहाई दिला दो, किसी की जान बचा लो और
कोई भलाई अपने भाई की तरफ़ बढ़ा दो और उस से कोई
मुसीबत दूर कर दो।”(1)

﴿132﴾.....उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना अ़इशा सिद्दीका
رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के
मददगार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जो अपने
मुसलमान भाई के किसी नेकी के काम में या किसी मुश्कल को
आसान करने में बादशाह के हां वासिता बने तो اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ
पुल सिरात को पार करने में कि जिस दिन क़दम डगमगा रहे होंगे
उस की मदद फ़रमाएगा।”(2)

﴿133﴾.....हज़रते सय्यिदुना अबू सईद खुदरी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से
रिवायत है कि सय्यिदे अ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने
इरशाद फ़रमाया : “ज़ालिम हाकिम के सामने हक़ बात कहना
बहुत बड़ा जिहाद है।”(3)



①..... شعب الایمان، باب فی تعاون علی البر والتقوی، الحدیث: ۷۶۸۳-۷۶۸۳،

ج ۶، ص ۱۲۴.

②..... المعجم الاوسط، الحدیث: ۳۵۷۷، ج ۲، ص ۳۷۴.

③..... سنن الترمذی، کتاب الفتن، باب ماجاء افضل الجهاد، الحدیث: ۲۱۸۱، ج ۴،

ص ۷۲، کلمة حق بدله عدل.

मुसलमान की इज़्ज़त का तहफ़ूज़ और इस की मदद करने की फ़ज़ीलत

﴿134﴾.....हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि रहमते आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जो भी अपने मुसलमान भाई की इज़्ज़त की हिफ़ाज़त करता है **اللَّهُ** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन जहन्नम की आग से उस की हिफ़ाज़त फ़रमाएगा ।” फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने येह आयते मुबारका तिलावत फ़रमाई :

وَكَانَ حَقًّا عَلَيْنَا نَصْرُ الْمُؤْمِنِينَ *तर्जमए कन्ज़ुल इमन : और हमारे जिम्मए करम पर है मुसलमानों की मदद फ़रमाना । (1)*

(प २१, الروम: ४७)

﴿135﴾.....हज़रते सय्यिदुना इमरान बिन हुसैन رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जो अपने भाई की मदद करने की ताक़त रखता हो और ग़ैर मौजूदगी में उस की मदद करे तो **اللَّهُ** عَزَّوَجَلَّ दुन्या व आख़िरत में उस की मदद फ़रमाएगा ।” (2)

﴿136﴾.....हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : जो अपने भाई की ग़ैर मौजूदगी में उस की मदद करे तो **اللَّهُ** عَزَّوَجَلَّ दुन्या व

①.....مشكوة المصابيح، كتاب الآداب، باب الشفقة والرحمة على الخلق،

الحديث: ٤٩٨٢، ج ٢، ص ٢١٥.

②.....البحر الزخار المعروف بمسند البرار، مسند عمران بن حصين، الحديث: ٣٥٤٢،

ج ٩، ص ٣١.

आख़िरत में उस की मदद फ़रमाएगा ।” (1)

﴿137﴾.....हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अब्दुल्लाह और हज़रते सय्यिदुना अबू तलहा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये रहमत, शफीए उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जो किसी मुसलमान की ऐसी जगह मदद करना छोड़ देता है जहां उस की बे इज़्ज़ती हो रही हो तो **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ उस शख्स की मदद भी ऐसी जगह नहीं फ़रमाता जहां वोह मदद का त़लबगार होता है और जो किसी मुसलमान की ऐसी जगह मदद करता है जहां उस की बे इज़्ज़ती हो रही हो और उस की आबरू रेज़ी की जा रही हो तो **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ उस (मददगार) की ऐसी जगह मदद फ़रमाता है जहां वोह मदद का त़लबगार होता है ।” (2)

﴿138﴾.....हज़रते सय्यिदुना सहल बिन मुआज़ बिन अनस जुहनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, رَؤُوفٌ رَّحِيمٌ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जिस ने किसी मुसलमान (की इज़्ज़त) को उस मुनाफ़िक़ से बचाया जो पीठ पीछे उस की बुराई कर रहा था तो **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ (बरोज़े क़ियामत) उस की तरफ़ एक फ़िरिशता भेजेगा जो उसे जहन्नम की आग से बचाएगा और जिस ने किसी मुसलमान को ज़लीलो रुस्वा करने के लिये कोई बात की **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ उसे जहन्नम के पुल पर रोके रखेगा यहां तक कि अपनी कही हुई बात से निकले (या'नी उस पर कोई दलील ले आए) ।” (3)

①.....شعب الإيمان للبيهقي، باب في التعاون على البر والتقوى، الحديث: ٧٦٣٧،

ج ٦، ص ١١١.

②.....سنن أبي داؤد، كتاب الادب، باب من رد عن مسلم غيبة، الحديث: ٤٨٨٤، ج ٤، ص ٣٥٥.

③.....المعجم الكبير، الحديث: ٤٣٣، ج ٢٠، ص ١٩٤.

लोगों से महबूबत करने की फ़ज़ीलत

﴿139﴾.....हज़रते सय्यिदुना अबू हु़रैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि सरकारे मदीना, करारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “ईमान के बा’द सब से अफ़ज़ल अमल लोगों से महबूबत करना है ।”(1)

﴿140﴾.....हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से रिवायत है कि मीठे मीठे आका, मक्की मदनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “मियाना रवी से खर्च करना निस्फ़ मईशत, लोगों से महबूबत करना निस्फ़ अक्ल और अच्छा सुवाल करना आधा इल्म है ।”(2)

﴿141﴾.....हज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि शहनशाहे मदीना, करारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “लोगों से खुश अख़लाकी से मिलना सदका है ।”(3)

राहे खुदा में मदद करने की फ़ज़ीलत

﴿142﴾.....हज़रते सय्यिदुना जैद बिन ख़ालिद رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि “जिस ने मुजाहिद को सामान वगैरा मुहय्या किया उस का अज़्र भी मुजाहिद की तरह है और जिस ने मुजाहिद के घर वालों की देख भाल की उस का अज़्र भी मुजाहिद की मिस्ल है ।”(4)

①.....جامع الاحاديث للسيوطي، حرف الهمزة مع الفاء، الحديث: ٣٤٩٥، ج ٢، ص ١٣.

②.....شعب الايمان لليهقي، باب في الاقتصاد في النفقة.....الخ، الحديث: ٦٥٦٨، ج ٥، ص ٢٥٤.

③.....شرح صحيح البخاري لابن بطال، كتاب الادب، باب المداراة مع الناس، ج ٩، ص ٣٠٥.

④.....صحيح ابن حبان، كتاب السير، باب فضل الجهاد، فصل ذكر البيان بان قوله

فقد غزا.....الخ، الحديث: ٤٦١٣، ج ٧، ص ٧١.

﴿143﴾.....हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन ख़ालिद رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जिस ने मुजाहिद को जिहाद में जाने के लिये जादे राह मुहय्या किया तो बेशक उस ने (खुद) जिहाद किया और जिस ने मुजाहिद के घर वालों की अच्छी तरह देख भाल की तो उसे भी जिहाद करने वाले की मिस्ल सवाब मिलेगा ।” (1)

हाजी की मदद करने और रोज़ा इफ़तार करने की फ़ज़ीलत

﴿144﴾.....हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन ख़ालिद رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक़ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जिस ने रोज़ा इफ़तार करवाया, मुजाहिद को जिहाद में जाने के लिये जादे राह मुहय्या किया तो उसे भी (रोज़े और जिहाद का) सवाब मिलेगा और उन के अज़्र में भी कमी वाक़ेअ न होगी ।” (2)

﴿145﴾.....हज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “**أَبْلَاهُ** عَزَّوَجَلَّ एक हज़ के सबब तीन लोगों को जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा : (1) मय्यित (2) उस की तरफ़ से हज़ करने वाला और (3) वसियत पूरी करने वाला ।” (3)

①.....صحيح المسلم، كتاب الاماره، باب فضل اعانة الغازي.....الخ، الحديث: ١٨٩٥،

ص ١٠٥٠.

②.....المصنف لابن ابي شيبة، كتاب الجهاد، باب ما ذكر في فضل الجهاد.....الخ،

الحديث: ٢٥١، ج ٤، ص ٥٩٩.

③.....السنن الكبرى للبيهقي، كتاب الحج، باب النيابة في الحج.....الخ، الحديث: ٩٨٥٥،

ج ٥، ص ٢٩٣.

﴿146﴾.....हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे हबीब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जो हलाल कमाई से किसी रोज़ेदार को इफ़्तार करवाए तो मलाइका पूरा रमज़ान उस के लिये दुआए मग़फ़िरत करते रहते हैं और शबे क़द्र में हज़रते जिब्राईले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام उस से मुसाफ़हा फ़रमाएंगे और जिस शख़्स से हज़रते जिब्राईले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام मुसाफ़हा फ़रमाते हैं उस का दिल नर्म और आंसू कसीर हो जाते हैं।” एक शख़्स ने अर्ज़ की : “या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ अगर किसी के पास इतना न हो तो?” इरशाद फ़रमाया : “चाहे एक लुक़्मा या रोटी का टुकड़ा ही हो।” एक और शख़्स ने अर्ज़ की : “या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ अगर किसी के पास इतना भी न हो तो?” इरशाद फ़रमाया : “चाहे दूध की लस्सी ही हो।” एक और शख़्स ने अर्ज़ की : अगर इतना भी न हो तो?” आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “पानी के एक घूंट से ही इफ़्तार करवा दे (तब भी येह सवाब पाएगा)।”

छोटों पर शफ़क़्त, बड़ों की इज़्ज़त और उलमा

का एहतिराम करने की फ़ज़ीलत

﴿147﴾.....हज़रते सय्यिदुना उबादा बिन सामित رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ बयान करते हैं कि मैं ने नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को इरशाद फ़रमाते हुवे सुना कि “जो हमारे बड़ों की इज़्ज़त, हमारे छोटों पर शफ़क़्त न करे और हमारे उलमा का हक़ न पहचाने (या'नी उन का एहतिराम न करे)

वोह मेरी उम्मत में से नहीं।”⁽¹⁾

﴿148﴾.....हज़रते सय्यिदुना सबाह् رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ अपने दादा से रिवायत करते हैं कि सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “सफ़ेद बालों वाले मुसलमान और हामिले कुरआन (आलिम व हाफ़िज़) जो कुरआन में ज़ियादती करे न उस से ए'राज़ करे उन की ता'जीम करना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ता'जीम करना ही है।”⁽²⁾

﴿149﴾....हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरोबर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जिस नौजवान ने किसी बुढ़े का उस की उम्र की वजह से इकराम किया तो उस के बदले **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ किसी के ज़रीए उस की इज़्जत अफ़ज़ाई फ़रमाएगा।”⁽³⁾

उलमा के लिये मजलिस कुशादा करने की फ़ज़ीलत

﴿150﴾.....हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रहूमतुल्लिल आलमीन صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “तुम अपनी मजालिस को आलिम के इल्म, बुढ़े की उम्र और सुल्तान के ओहदे की

①.....المسند للإمام احمد بن حنبل، حديث عباده بن صامت، الحديث: ٢٢٨١٩،

ج ٨، ص ٤١٢.

②.....سنن ابى داؤد، كتاب الادب، باب فى تنزيل الناس منازلهم، الحديث: ٤٨٤٣،

ج ٤، ص ٣٤٤.

③.....سنن الترمذى، كتاب البر والصلة، باب ماجاء فى اجلال الكبير، الحديث: ٢٠٢٩،

ج ٣، ص ٤١١.

वजह से कुशादा कर दिया करो।”(1)

मुसलमान भाई के तक्वा पेश करने की फ़ज़ीलत
 ﴿151﴾.....हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के पास हाज़िर हुवे। उस वक़्त अमीरुल मोअमिनीन رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ तक्वे पर टेक लगाए बैठे थे। आप ने वोह तक्वा हज़रते सय्यिदुना सलमान رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ को दे दिया तो उन्होंने ने अर्ज़ की : **“अल्लाह अक़बर ! रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने सच फ़रमाया।”** अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : “ऐ अबू अब्दुल्लाह ! हमें भी बताओ कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने क्या फ़रमाया।” आप رَضِيَ اللهُ تَعालَى عَنْهُ ने अर्ज़ की : मैं बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुवा उस वक़्त हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ तक्वे से टेक लगाए तशरीफ़ फ़रमा थे तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने वोह तक्वा मुझे अता फ़रमा दिया और इरशाद फ़रमाया : **“कोई मुसलमान अपने भाई के पास जाए और वोह उस की तकरीम करते हुवे अपना तक्वा उसे दे दे तो **اَعَزَّوَجَلَّ** उस की मग़फ़िरत फ़रमा देता है।”**(2)

﴿152﴾.....हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से रिवायत है कि शफ़ीउल मुज़निबीन, अनीसुल

①.....كثر العمال، كتاب الصحبة من قسم الاقوال، باب الايمان، الحديث: ٢٥٤٩٥،

ج ٩، ص ٦٦.

②.....المستدرک للحاکم، کتاب معرفة الصحابة، باب تکریم المسلم بالقاء.....الخ،

الحديث: ٦٦٠١، ج ٤، ص ٧٨٢.

गरीबीन صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “तीन चीज़ें वापस न की जाएं खुश्बू, तक्या और दूध।”⁽¹⁾

खाना खिलाने की फ़ज़ीलत

﴿153﴾.....हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ बयान करते हैं कि जब **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मदीनए मुनव्वरा तशरीफ़ लाए तो लोग जल्दी से आप की तरफ़ लपके, मैं भी आया ताकि आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का दीदार करूं। जब मैं ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ के चेहरए अन्वर को देखा तो देखते ही पहचान गया कि येह किसी झूटे का चेहरा नहीं है। सब से पहली बात जो मैं ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ से सुनी वोह येह है कि “खाना खिलाओ और सलाम आम करो और अपने रिश्तेदारों से अच्छा सुलूक करो और जब लोग सो रहे हों तो नमाज़ पढो सलामती के साथ जन्नत में दाख़िल हो जाओगे।”⁽²⁾

﴿154﴾.....हज़रते सय्यिदुना उबादा बिन सामित رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ बयान करते हैं कि एक शख्स ने बारगाहे रिसालत में हाज़िर हो कर अर्ज़ की : “अफ़ज़ल आ'माल कौन से हैं?” हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “**अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ पर ईमान लाना। उस की तस्दीक़ करना। **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में जिहाद करना और मक्बूल हज़।”

①.....سنن الترمذی، کتاب الادب، باب ماجاء فی کراهة رد الطیب، الحدیث: ۲۷۹۹،

ج ۴، ص ۳۶۲.

②.....سنن الترمذی، کتاب صفة القيامة، باب ۴۲، الحدیث: ۲۴۹۳، ج ۴، ص ۲۱۹.

जब वोह जाने लगा तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने उसे बुला कर इरशाद फ़रमाया : “इन से ज़ियादा आसान खाना खिलाना और नर्मी से गुफ़्तगू करना है ।”(1)

﴿155﴾.....हज़रते सय्यिदुना अम्र बिन अबसा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ बयान करते हैं कि मैं बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुवा और अर्ज की : “इस्लाम क्या है ?” तो ख़ातमुल मुर्सलीन, रहमतुल्लिल आलमीन صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “खाना खिलाना और नर्मी से गुफ़्तगू करना ।” मैं ने अर्ज की : “ईमान क्या है ?” इरशाद फ़रमाया : “सब्र करना और सखावत करना ।”(2)

﴿156﴾.....हज़रते सय्यिदुना सुहैब बिन सिनान رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ बयान करते हैं कि मैं ने सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को इरशाद फ़रमाते हुवे सुना कि “तुम में बेहतर वोह है जो खाना खिलाता है ।”(3)

﴿157﴾.....हज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि सय्यिदे आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “मग़फ़िरत के अस्बाब में से एक सबब भूके मुसलमान को खाना खिलाना है । **اللَّهُ** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

①.....مجمع الزوائد، كتاب الايمان، باب اي العمل افضل.....الخ، الحديث: ٢٠٢ - ٢٠١،

ج ١، ص ٢٢٥ - ٢٢٤ .

②.....مجمع الزوائد، كتاب الايمان، باب اي العمل.....الخ، الحديث: ٢١٠، ج ١، ص ٢٢٧ .

③.....المسند للامام احمد بن حنبل، حديث صهيب بن سنان، الحديث: ٢٣٩٨١،

ج ٩، ص ٢٤٠ .

﴿١٣﴾ أَوْ اطَّعِمُوا فِي يَوْمِ ذِي مَسْجَبَةٍ ۖ تَرْجَمُهُ كَنْزُ الْجُرْمَانِ : يَا بُرَّكَاتُ
के दिन खाना देना । (1)

﴿158﴾.....हज़रते सय्यिदुना शरीह رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ अपने दादा से रिवायत करते हैं कि रहमते अलम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “मग़फ़िरत के अस्बाब में से खाना खिलाना और सलाम को अम करना भी हैं ।” (2)

﴿159﴾.....हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अम्र رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि हुजूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जिस ने अपने मुसलमान भाई को खाना खिलाया यहां तक कि वोह सैर हो गया और पानी पिलाया यहां तक कि वोह सैराब हो गया तो **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ खिलाने वाले को जहन्नम से सात ख़न्दकों की मसाफ़त दूर कर देगा । हर दो ख़न्दकों के दरमियान 100 साल की मसाफ़त है ।” (3)

﴿160﴾.....उम्मूल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीका رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا से रिवायत है कि रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जब तक बन्दे का दस्तर ख़वान बिछा रहता है फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार करते रहते हैं ।” (4)

①.....المستدرک للحاکم، کتاب التفسیر، باب اطعام المسلم السغبان.....الخ،

الحديث: ٣٩٩، ج ٣، ص ٣٧٢.

②.....المعجم الكبير، الحديث: ٤٦٩، ج ٢٢، ص ١٨٠.

③.....شعب الایمان للبيهقي، باب فی الزکوة، فصل فی الطعام وسقى الماء،

الحديث: ٣٣٦٨، ج ٣، ص ٢١٧.

④.....المعجم الاوسط، الحديث: ٤٧٢٩، ج ٣، ص ٣٢٤.

﴿161﴾.....हज़रते सय्यिदुना जाबिर रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये रहमत, शफीए उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “**اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ को सब से ज़ियादा पसन्द वोह खाना है जिसे खाने वाले ज़ियादा हों।” (1)

﴿162﴾.....हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफुरहीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जिस घर में मेहमान हों भलाई उस घर की तरफ़ कोहान में छुरी चलने से भी ज़ियादा तेज़ पहुँचती है।” (2)

﴿163﴾.....हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जो अपने मुसलमान भाई की भूक को मिटाने का एहतिमाम करे और उसे खाना खिलाए यहां तक कि वोह सैर हो जाए तो **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ उस की मग़फ़िरत फ़रमा देगा।” (3)

﴿164﴾.....हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अब्दुल्लाह رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि मीठे मीठे आक़ा, मक्की मदनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जो भूके को खाना खिलाए **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ उसे अपने अर्श के साए में जगह अता फ़रमाएगा।” (4)

①.....المسند لابى يعلى الموصلى، مسند جابر بن عبد الله، الحديث: ٤١، ٢٠، ج ٢، ص ٢٨٨.

②.....سنن ابن ماجه، كتاب الاطعمة، باب الضيافة، الحديث: ٣٣٥٦، ج ٤، ص ٥١.

③.....المسند لابى يعلى الموصلى، مسند انس بن مالك، الحديث: ٣٤٠٧، ج ٣، ص ٢١٤.

④.....تمهيد الفرش فى الحصول موجبة لظل العرش للسيوطى، ذكر السبعين اللتين..... الخ، ص ٨.

﴿165﴾.....हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि शहनशाहे मदीना, करारे क़ल्बो सीना रिवायत है कि शहनशाहे मदीना, करारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “**اَللّٰهُمَّ** भूके जिगर को ठन्डा करने वाले (या'नी उसे खाना खिलाने वाले) से महब्बत फ़रमाता है ।”(1)

﴿166﴾.....हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जिस ने अपने मुसलमान भाई को कोई मीठी चीज़ खिलाई तो **اَللّٰهُمَّ** उस से महशर की सख़्त्रियां दूर फ़रमा देगा ।”(2)

﴿167﴾.....हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अम्र رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “बेशक जन्नत में बाला ख़ाने हैं जिन का अन्दरूनी मन्ज़र बाहर से और बैरूनी मन्ज़र अन्दर से नज़र आता है ।” सहाबए किराम رَضُوا اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ ने अर्ज़ की : “या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ येह किस के लिये हैं ?” इरशाद फ़रमाया : “येह उस के लिये हैं जो अच्छी गुफ़्तगू करे, खाना खिलाए और रात को जब लोग सो रहे हों तो येह **اَللّٰهُمَّ** की बारगाह में क़ियाम करे ।”(3)

﴿168﴾.....हज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि बारगाहे रिसालत में अर्ज़ की गई : “हज़ की (मानिन्द) कौन सी

①.....الكنى والاسماء لدولابي، باب من كنى ابو يحيى، الحديث: ٢٠٨١، ج ٣، ص ١١٨٨، برد بدله يشبع،

②.....الفردوس بعمائر الخطاب، باب الميم، الحديث: ٦٠٥٠، ج ٢، ص ٢٨١.

③.....المستدرک للحاکم، کتاب صلاة التطوع، باب صلاة الحاجة، الحديث: ١٢٤٠،

नेकी है?" तो सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

ने इरशाद फ़रमाया : "खाना खिलाना और नर्मी से गुफ़्तगू करना ।" (1)

﴿169﴾.....हज़रते सय्यिदुना बुदैल رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि

اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ के प्यारे हबीब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद

फ़रमाया : "बेशक मुझे اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये अपने

भाई को एक लुक़्मा खिलाना दस दिरहम सदक़ा करने से ज़ियादा

पसन्द है और दस दिरहम सदक़ा करना मुझे गुलाम आज़ाद करने

से ज़ियादा पसन्द है ।" (2)

﴿170﴾.....हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है

कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

ने इरशाद फ़रमाया : اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन इरशाद

फ़रमाएगा : "ऐ इब्ने आदम ! मैं बीमार था तू ने मेरी इयादत क्यूं न

की ?" वोह अर्ज़ करेगा : "ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ मैं तेरी इयादत कैसे करता

हालांकि तू तो रब्बुल अलमीन है ?" اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ इरशाद

फ़रमाएगा : "क्या तुझे इल्म न था कि मेरा फुलां बन्दा बीमार है फिर

भी तू ने उस की इयादत न की अगर तू उस की इयादत करता तो ज़रूर

मुझे उस के पास पाता ।" फिर اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाएगा :

"ऐ इब्ने आदम ! मैं ने तुझ से खाना मांगा तू ने मुझे खाना क्यूं न

खिलाया ?" वोह अर्ज़ करेगा : "ऐ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ मैं तुझे कैसे

खाना खिलाता ? तू तो तमाम जहानों को पालने वाला है ।"

①.....السنن الكبرى للبيهقي، كتاب الحج، باب فضل الحج والعمرة، الحديث: ١٠٣٩٠،

ج ٥، ص ٤٣٠، لين الكلام بدله طيب الكلام.

②.....شعب الايمان للبيهقي، باب في اكرام الضيف، فصل في التكلف للضيف،

الحديث: ٩٦٢٧، ج ٧، ص ١٠٠.

अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** इरशाद फ़रमाएगा : “क्या मेरे फुलां बन्दे ने तुझ से खाना न मांगा था लेकिन तू ने उसे न खिलाया क्या तू न जानता था कि अगर तू उसे खाना खिला देता तो उस का अन्न मेरे पास पाता ।” फिर **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** इरशाद फ़रमाएगा : “ऐ इब्ने आदम ! मैं ने तुझ से पानी मांगा तू ने मुझे पानी क्यूं न पिलाया ।” वोह अर्ज करेगा : “ऐ **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** मैं तुझे कैसे पानी पिलाता तू तो रब्बुल अलमीन है ।” **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** इरशाद फ़रमाएगा : “क्या मेरे फुलां बन्दे ने तुझ से पानी न मांगा था लेकिन तू ने उसे न पिलाया । अगर तू उसे पानी पिला देता तो जरूर उस का अन्न मेरे पास पाता ।”(1)

﴿171﴾.....अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तजा **كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمَ** ने इरशाद फ़रमाया : “मेरा अपने दोस्तों को एक साअ खाने पर जम्अ करना मुझे इस से ज़ियादा महबूब है कि मैं बाज़ार जाऊं और एक लौंडी ख़रीद कर आज़ाद कर दूं ।”(2)

﴿172﴾.....हज़रते सय्यिदुना अम्र **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** बयान करते हैं कि इमामे अली मक़ाम हज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** की जौजा ने उन के पास पैग़ाम भेजा कि “हम ने आप के लिये लज़ीज़ खाना और खुशबू तय्यार की है । आप अपने हम पल्ला लोग देखें और उन्हें साथ ले कर हमारे पास तशरीफ़ ले आएं ।” हज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** मस्जिद में गए और वहां जो मसाकीन व साइलीन थे उन्हें ले कर घर तशरीफ़ ले गए । हम साया ख़वातीन भी आप की जौजा के पास आ गईं और कहने

①.....صحیح المسلم، کتاب البر والصلة والآداب، باب فضل عبادة المريض،

الحديث: ٢٥٦٩، ص ١٣٨٩.

②.....کنز العمال، کتاب الضیافه من قسم الافعال، الحديث: ٢٥٩٦٧، ج ٥، جز ٩، ص ١١٨.

लगीं : “खुदा की क़सम तुम्हारे घर तो मसाकीन जम्अ हो गए ।” फिर हज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ अपनी जौजा के पास तशरीफ़ लाए और फ़रमाया : “मैं तुम्हें अपने उस हक़ की क़सम देता हूँ जो मेरा तुम पर है कि तुम खाना और खुशबू बचा कर नहीं रखोगी ।” फिर उन्होंने ने ऐसे ही किया । आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने पहले मसाकीन को खाना खिलाया फिर उन्हें कपड़े पहनाए और खुशबू लगाई ।

﴿173﴾.....हज़रते सय्यिदुना इस्माईल बिन अबू ख़ालिद رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ बयान करते हैं कि हज़रते सय्यिदुना अली बिन हुसैन رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا सुवारी पर सुवार मसाकीन के पास से गुज़रे जो बचे खुचे टुकड़े खा रहे थे । आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने उन्हें सलाम किया । मसाकीन ने आप को खाने की दा'वत दी तो आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने येह आयते मुबारका तिलावत की :

لِّلَّذِينَ لَا يُرِيدُونَ عُلُوًّا فِي الْأَرْضِ
وَلَا فِسَادًا (پ ۲۰، القصص: ۸۳) *तर्जमए कन्ज़ुल इमّान : जो
ज़मीन में तकब्बुर नहीं चाहते और
न फ़साद ।*

फिर सुवारी से उतर आए और उन के साथ खाना खाया । इस के बा'द इरशाद फ़रमाया : “मैं ने तुम्हारी दा'वत क़बूल की । अब तुम मेरी दा'वत क़बूल करो ।” फिर उन्हें अपने घर ले गए और खाना खिलाया और कपड़े और दराहिम अत्ता फ़रमाए ।” (1)
﴿174﴾.....हज़रते सय्यिदुना अम्र बिन दीनार رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ बयान करते हैं कि “हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا का दस्तर ख़्वान कुशादा और गुफ़्तू अच्छी होती थी ।”

﴿175﴾.....हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र क़रशी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं कि हज़्जाज के लिये मिस्री का एक बहुत बड़ा टुकड़ा बनाया गया जिसे लोग चौपायों पर भी न लाद सकते थे। फिर उसे एक छकड़े से खींच कर ख़लीफ़ा अब्दुल मलिक के पास लाया गया। वोह अपने घर से बाहर निकला और उस के हज़्म को देख कर उस की हैअत का अन्दाज़ा लगाया। मगर उसे न समझ आया कि इस का क्या किया जाए? चन्द लम्हात सोच कर अपने गुलाम को आवाज़ दी और कहा : “इसे हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन जा'फ़र رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के पास ले जाओ।” उन दिनों आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ख़लीफ़ा के पास ही ठहरे हुवे थे। जब मिस्री का इतना बड़ा टुकड़ा उन के पास लाया गया तो वोह बड़े मुतअज़्जिब हुवे और लोग उसे देखने के लिये जम्अ हो गए। आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने पूछा : “येह क्या है?” अर्ज़ की गई : “येह मिस्री का टुकड़ा है जो ख़लीफ़ा ने आप के लिये भेजा है।” आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने बाहर निकल कर एक ऐसी चीज़ देखी जिस की मिस्ल लोगों ने पहले न देखी थी कुछ देर ग़ौरो फ़िक्क़र करने के बा'द गुलाम से फ़रमाया : “चमड़े के बिछौने और कुल्हाड़ियां ले आओ।” चुनान्चे, उसे तोड़ने के लिये कुल्हाड़ियां लाई गईं और साथ ही चमड़े के बिछौने भी पेश कर दिये गए। आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : “जिस के हाथ जो आए वोह उसी का है।” फिर आप वहीं खड़े रहे यहां तक कि वोह टुकड़ा तमाम का तमाम तोड़ लिया गया। जब येह ख़बर ख़लीफ़ा अब्दुल मलिक को पहुंची तो वोह बड़ा मुतअज़्जिब हुवा और कहने लगा : “वोह इस मुआमले में हम सब से ज़ियादा जानने वाले हैं।”

﴿176﴾.....हज़रते सय्यिदुना उरवा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि मैं हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन उबादा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मिला तो एक ए'लान करने वाला लोगों के दरमियान ए'लान कर रहा था कि “जो कोई गोश्त व चर्बी खाना चाहे वोह सा'द बिन उबादा के घर आ जाए।” आप फ़रमाते हैं : फिर मेरी मुलाक़ात उन के बेटे कैस से हुई तो वोह भी येही ए'लान कर रहे थे। हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन उबादा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने दुआ की : “ऐ **اَللّٰهُمَّ** मुझे कामिल ता'रीफ़ करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा। मुझे बुजुर्गी अता फ़रमा और बुजुर्गी तो नेक आ'माल में है और नेक आ'माल से माल मुमकिन हैं। ऐ **اَللّٰهُمَّ** क़लील माल मुझे किफ़ायत नहीं कर सकता और मैं भी इस पर तक्वा नहीं कर सकता।” (1)

﴿177﴾.....हज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ बयान करते हैं कि हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا रोज़ा रखा करते और हज़रते सय्यिदुना सफ़िया बिनते उबैद رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا उन की इफ़्तारी के लिये कुछ बना दिया करती थीं। एक दिन इन के पास उम्दा क़िस्म का अनार लाया गया तो दरवाज़े पर एक साइल ने सुवाल किया। आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : “येह उसे दे दो।” लेकिन हज़रते सय्यिदुना सफ़िया رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا ने अर्ज की : “उस के लिये इस से बेहतर है।” फिर हज़रते सय्यिदुना सफ़िया رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا ने मुझ से कहा कि “उसे फुलां चीज़ दे दो।” फिर जब वोह अनार हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا के सामने पेश किया गया तो उन्होंने ने फ़रमाया : “इसे उठाओ और किसी दूसरे साइल को दे दो क्यूंकि मैं इसे सदक़ा करने की निय्यत कर चुका हूँ।”

1.....المصنف لابن ابى شيبه، كتاب الادب، باب ما ذكر فى الشرح، الحديث: ١٤-١٣.

﴿178﴾.....हज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ बीमार हुवे तो मैं ने उन के लिये एक दिरहम के अंगूर ख़रीदे । जब वोह अंगूर आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के सामने पेश किये तो एक साइल ने आ कर सुवाल किया । आप रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : “येह उसे दे दो ।” (मैं ने दे दिये) फिर मैं ने उस साइल के पीछे किसी को भेजा कि साइल से येह अंगूर इस तरह ख़रीदे कि हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ को पता न चले । जब अंगूर दोबारा आप की ख़िदमत में पेश किये गए तो वोह साइल फिर आ गया । आप रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फिर फ़रमाया : “येह उसे दे दो ।” तीन मरतबा इसी तरह हुवा और हर मरतबा साइल से अंगूर ख़रीद कर आप को पेश किये गए लेकिन आप रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने हर बार अंगूर आने वाले साइल को देने का हुक्म फ़रमाया हत्ता कि लोगोँ ने साइल को इस तरह रोका कि हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ को ख़बर न हुई ।⁽¹⁾

﴿179﴾.....हज़रते सय्यिदुना ख़ैसमा रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना ईसा बिन मरयम (عَلَى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام) ने अपने हरवारियों में से कुछ लोगोँ को बुलाया, उन्हें खाना खिलाया और फिर खड़े हो कर इरशाद फ़रमाया : “इबादत गुज़ारोँ के साथ ऐसा ही सुलूक किया करो ।”⁽²⁾

①.....شعب الايمان للبيهقي، باب في الزكاة، فصل فيما جاء في الاشارة، الحديث: ٣٤٨١،

ج ٣، ص ٢٥٩، بتغير قليل.

②.....شعب الايمان للبيهقي، باب في اكرام الضيف، فصل في التكلف للضيف..... الخ،

الحديث: ٩٦٣٨، ج ٧، ص ١٠٢.

﴿180﴾.....हज़रते सय्यिदुना अबू कुबैसा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ बयान करते हैं कि हज़रते सय्यिदुना ख़ैसमा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ हमेशा खजूर के हल्वे की टोकरी अपने तख़्त के नीचे रखा करते थे। जब उन के पास कुर्रा (या'नी कुरआन पढ़ने वाले) आते तो आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ यह हल्व्वा उन्हें खिलाया करते।⁽¹⁾

﴿181﴾.....हज़रते सय्यिदुना इब्ने औन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं कि “हम जब भी हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन सिरीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के पास जाते तो वोह हमें खजूर का हल्व्वा और फ़ालूदा खिलाया करते थे।”⁽²⁾

﴿182﴾.....हज़रते सय्यिदुना अबू खुलदा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ बयान करते हैं कि हम हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन सिरीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के पास गए तो उन्होंने ने फ़रमाया : “मुझे समझ नहीं आ रही कि तुम्हें क्या चीज़ पेश करूं ? गोश्त और रोटी तो तुम सब के घर में है।” फिर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने अपनी लौंडी को आवाज़ दी और शहद लाने का कहा और फिर खुद शहद हमें खाने के लिये डाल कर देते।⁽³⁾

﴿183﴾.....हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अबी अबला رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ बयान करते हैं कि हम बैतुल मुक़द्दस के ‘बाबुल अस्बात’ में हज़रते सय्यिदुना उम्मे दरदा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا के पास हाज़िर हुवा करते तो वोह हमें हदीस बयान फ़रमातीं। जब हम उन के पास से उठने का इरादा करते तो वोह हमारे लिये हल्व्वा और दीगर खाने की चीज़ें मंगवा लिया करतीं।”

①.....حلیة الاولیاء، الرقم ۲۵۴ حیثمہ بن عبدالرحمن، الحدیث: ۴۹۷۴، ج ۴، ص ۱۲۱.

②.....حلیة الاولیاء، الرقم ۱۹۳ ابن سرین، الحدیث: ۲۳۲۱، ج ۲، ص ۳۰۵.

③.....حلیة الاولیاء، الرقم ۱۹۳ ابن سرین، الحدیث: ۲۳۲۳، ج ۲، ص ۳۰۵.

﴿184﴾.....हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि सरकारे मक्कए मुकर्रमा सरदारे मदीनए मुनव्वरा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जब तुम्हारे सामने मीठी चीज़ पेश की जाए तो उस में से ज़रूर कुछ ले लो और जब तुम्हें खुशबू पेश की जाए तो उस में से भी ज़रूर कुछ लगा लिया करो ।” (1)

﴿185﴾.....हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम जमही رَحِمَهُ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ बयान करते हैं कि एक आ'राबी (दीहात का रहने वाला) हज़रते सय्यिदुना अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के घर में दाख़िल हुवा । आप के घर के एक जानिब हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا फ़तवा दिया करते । इन से जो भी सुवाल किया जाता उस का जवाब देते और दूसरी जानिब हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا हर आने वाले को खाना खिलाते । येह देख कर उस आ'राबी ने कहा : “जो दुन्या और आख़िरत की भलाई चाहता है वोह अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब के घर ज़रूर आए क्यूंकि येह फ़तवा देते, लोगों को फ़िक़ह सिखाते और खाना भी खिलाते हैं ।” (2)

﴿186﴾.....हज़रते सय्यिदुना जुबैर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا कुरबान गाह में जानवर ज़ब्ह करवा कर वहीं लोगों में तक्सीम फ़रमा दिया करते थे । इसी वजह से मक्कए मुकर्रमा رِزْقِ اللهِ شَرْفًا وَتَعْظِيمًا के बाज़ार में वोह जगह इब्ने अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا की कुरबान गाह के नाम से मशहूर हो गई । (3)

①.....مجمع الزوائد، كتاب الأطعمه، باب في الحلوى، الحديث: ٧٩٩١، ج ٥،

ص ٤٦، بتغير قليل.

②.....تاريخ مدينة دمشق لابن عساکر، الرقم ٤٤٥٦ عبیدالله بن عباس، ج ٣٧، ص ٤٨٠.

③.....تاريخ مدينة دمشق لابن عساکر، الرقم ٤٤٥٦ عبیدالله بن عباس، ج ٣٧، ص ٤٧٢.

﴿187﴾....हज़रते सय्यिदुना अली बिन मुहम्मद मदाइनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَظِيمِ फ़रमाते हैं कि “हज़रते सय्यिदुना उबैदुल्लाह बिन अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا के लिये हर रोज़ एक ऊंट या इस के गोश्त के बराबर बकरियों को ज़ब्ह किया जाता था।”⁽¹⁾

﴿188﴾....हज़रते सय्यिदुना अब्बान बिन उस्मान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّانِ फ़रमाते हैं कि एक शख्स ने हज़रते सय्यिदुना उबैदुल्लाह बिन अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا को रुस्वा करने का इरादा किया और लोगों के सामने जा कर कहने लगा कि “उबैदुल्लाह बिन अब्बास ने तुम्हें बुलाया है कि आज दो पहर का खाना मेरे पास खाओ।” यह सुन कर लोग जूक दर जूक आना शुरू हो गए यहां तक कि आप का घर भर गया। हज़रते सय्यिदुना उबैदुल्लाह बिन अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا ने दरयाफ़्त फ़रमाया : “लोगों को क्या हो गया है?” अर्ज़ की गई : “हुज़ूर! आप का भेजा हुवा शख्स आया था (उस ने इस तरह कहा है)।” आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ सारा माजरा समझ गए और इरशाद फ़रमाया : “दरवाज़ा बन्द कर दो।” फिर अपने खुद्दाम से कहा कि “बाज़ार से सारे फल ले आओ।” (जब वोह फल ले आए तो) लोगों ने फल शहद से मिला कर खाए। आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने दोबारा अपने चन्द खुद्दाम से कहा कि “भुना हुवा गोश्त और रोटियां ले आओ।” खुद्दाम रोटियां ले आए तो लोगों को पेश कर दी गई। जब लोग खाने से फ़रिग़ हुवे तो आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इरशाद फ़रमाया : “क्या हम ने जिस चीज़ का इरादा (या'नी जो ए'लान) किया था उसे पूरा कर दिया?” तो लोगों ने अर्ज़ की : “जी हां।” फिर आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया कि अगर और

①.....तारीख़ मदिने دمشق لابن عساکر، الرقم ٤٤٥٦ عبيدالله بن عباس، ج ٣٧،

ص ٤٨١، بدون او مثل ذلك من الجزور من الغنم.

लोग भी आ जाएं तो हमें परवाह नहीं।” (1)

﴿189﴾.....हज़रते सय्यिदुना इमाम शा'बी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي فَرَمَاتे हैं कि “हज़रते सय्यिदुना अशअस बिन कैस رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने एक शख़्स को हज़रते सय्यिदुना अदी बिन हातिम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की तरफ़ आरिख्यतन हांडी लेने के लिये भेजा तो हज़रते सय्यिदुना अदी बिन हातिम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : “हांडी को भर दो।” फिर उसे हज़रते सय्यिदुना अशअस बिन कैस रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की तरफ़ भेज दिया। हज़रते सय्यिदुना अशअस बिन कैस रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने उसे वापस लौटा दिया और फ़रमाया : “मैं ने तो ख़ाली हांडी मांगी थी।” हज़रते सय्यिदुना अदी बिन हातिम रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने यह कह कर हांडी दोबारा भेज दी कि “हम ख़ाली बरतन नहीं देते।” (2)

﴿190﴾.....हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं कि “तीन लोग ऐसे हैं जिन की बराबरी करने की मुझ में ताक़त नहीं और चौथा वोह शख़्स है कि जिस की किफ़ायत मुझ से **اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** ही करवा सकता है। वोह तीन लोग जिन की मैं बराबरी करने की ताक़त नहीं रखता : एक वोह शख़्स जो अपनी मजलिस में मेरे लिये जगह कुशादा करे। दूसरा वोह जो शदीद प्यास में मुझे पानी पिलाए। तीसरा वोह जिस के क़दम मेरे दरवाजे पर आने जाने में गुबार आलूद हों और चौथा शख़्स जिस की मदद **اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** ही मुझ से करवा सकता है वोह है जिसे कोई हाजत लाहिक़ हो और वोह सारी रात इस फ़िक्र में जाग कर गुज़ार दे कि मेरी हाजत कौन पूरी करेगा जब सुब्ह हो तो मुझे हाजत पूरी करने

1.....تاريخ مدينة دمشق لابن عساکر، الرقم ٤٤٥٦ عبیداللہ بن عباس، ج ٣٧، ص ٤٧٢.

2.....اسد الغابة في معرفة الصحابة لابن اثیر، الرقم ٣٦٠٤ عدی بن حاتم، ج ٤، ص ١٢.

वाला पाए येही वोह शख़्स है कि जिस की मदद मुझे से **अल्लाह** ही करवा सकता है और मुझे इस बात से हया आती है कि कोई (अपनी हाज़त के लिये) तीन मरतबा मेरे घर तक चल कर आए और मैं उस की मदद न करूं।”

मुसलमान भाई को लिबास पहनाने की फ़ज़ीलत

﴿191﴾.....हज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ बयान करते हैं कि अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने एक दिन सहाबए किराम أَجْمَعِينَ की मौजूदगी में अपनी नई कमीस मंगवा कर उसे जैबे तन फ़रमाया। मेरा गुमान है कि उन्होंने ने कमीस पहनने से पहले येह दुआ पढ़ी :
 ‘या’नी : तमाम ता’रीफ़ें उस खुदा के लिये जिस ने मुझे पहनाया और मेरे सित्र को ढांपा और इस से मैं अपनी ज़िन्दगी में ज़ीनत हासिल करता हूं।”
 फिर फ़रमाया : मैं ने दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरोबर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को देखा, आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने नया लिबास जैबे तन फ़रमाया और येही दुआ पढ़ी जो मैं ने पढ़ी। फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “उस ज़ात की कसम जिस के कब्ज़ए कुदरत में मेरी जान है ! जो भी मुसलमान नया लिबास पहने और येह दुआ पढ़े फिर अपना पुराना लिबास **अल्लाह** की रिज़ा के लिये किसी मुसलमान मिस्कीन फ़कीर को दे दे तो जब तक उस पर कपड़े का एक धागा भी बाकी रहेगा वोह बन्दा **अल्लाह** की पनाह व अमान और कुर्ब में रहेगा चाहे येह (देने वाला) ज़िन्दा हो या मर जाए।” (1)

1..... کتاب الدعاء لطبرانی، باب القول عندلبس الثياب، الحديث: ۳۹۳، ص ۱۴۲.

﴿192﴾.....हज़रते सय्यिदुना अबू सईद खुदरी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जो भूके मिस्कीन को खाना खिलाए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे जन्नती खाना खिलाएगा । जो प्यासे को पानी पिलाए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे क़ियामत के दिन मोहर लगाई हुई ख़ालिस शराबे तहूर से सैराब फ़रमाएगा और जो किसी बरहना को लिबास पहनाए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे सब्ज जन्नती हुल्ले पहनाएगा ।” (1)

हमसाए के हुक्क का बयान

﴿193﴾.....मरवी है कि शफ़ीज़ल मुज़निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام जिब्रीले अमीन मुझे हमसाए के हक़ के बारे में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का हुक्म पहुंचाते रहे हत्ता कि मुझे गुमान हुआ कि अज़ करीब हमसाए को विरासत में हिस्सेदार बना देंगे ।” (2)

﴿194﴾.....हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अम्र رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने एक बकरी ज़ब्ह करने का हुक्म दिया तो वोह ज़ब्ह कर दी गई । फिर आप ने अपने ख़ादिम से दरयाफ़्त किया कि क्या तुम ने इस में से हमारे यहूदी हमसाए को कुछ भेजा है (3) क्यूंकि मैं ने

①.....سنن الترمذی، کتاب صفة القيامة، الحديث: ٢٤٥٧، ج ٤، ص ٢٠٤.

②.....صحيح البخاری، کتاب الادب، باب الوصاة بالحار، الحديث: ٦١٠٥، ج ٤، ص ١٠٤.

③...जिम्मी को ज़कात वगैरा सदक़ए वाजिबा के इलावा सदक़ए नाफ़िला दे सकते हैं अलबत्ता हर्बी को सदक़ए नाफ़िला भी नहीं दे सकते ।”

(تفسيرات احمدیه، پ ١٠، التوبه، تحت الآیه: ٢٩، ص ٤٥٨)

नीज़ ग़ैर मुस्लिम ख़्वाह जिम्मी हों या हर्बी उन्हें कुरबानी का गोशत भी नहीं दे सकते । चुनान्वे प्यारे मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने पड़ोसी के हुक्क बयान.....

अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उयूब **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** को इरशाद फ़रमाते हुवे सुना कि “जिब्रीले अमीन **عَلَيْهِ السَّلَام** मुझे हमसाए के हक़ के बारे में **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** का हुक्म पहुंचाते रहे हत्ता कि मुझे गुमान हुवा कि अ़न क़रीब हमसाए को विरासत में हिस्सेदार बना देंगे।” (1)

﴿195﴾.....हज़रते सय्यिदुना अबू उमामा बाहिली **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** बयान करते हैं कि हुस्ने अख़्लाक के पैकर, नबियों के ताजवर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** अपनी ऊंटनी जदआ पर सुवार थे मैं ने आप **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ** को इरशाद फ़रमाते हुवे सुना कि “मैं तुम्हें पड़ोसी के बारे में वसियत करता हूं।” आप **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने येह बात बार बार इरशाद फ़रमाई। रावी कहते हैं कि मैं ने (दिल में) कहा कि “आप **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** उसे वारिस बना देंगे।” (2)

﴿196﴾....हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** से रिवायत है कि ख़ातमुल मुर्सलीन, रहूमतुल्लिल अ़लमीन **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने इरशाद फ़रमाया : “तमाम मख़लूक **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** की परवर्दा है और **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** को अपनी मख़लूक में सब से ज़ियादा महबूब वोह है जो उस के परवर्दा के

.....करते हुवे इरशाद फ़रमाया : “काफ़िर पड़ोसी का सिर्फ़ एक हक़ है और वोह हक़के पड़ोस है।” सहाबए किराम **رَضُوا اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ** ने अर्ज़ की : “क्या हम उन्हें अपनी कुरबानियों में से दें ?” तो आप **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने इरशाद फ़रमाया : “मुशरिकीन को अपनी कुरबानियों में से कुछ भी न दो।”
(شعب الایمان للبيهقي، باب في اکرام الجار، الحديث: ٩٥٦٠، ج ٧، ص ٨٣)

①.....المسنللحمیدی، احادیث عبداللّه بن عمرو بن عاص، الحديث: ٥٩٣، ج ٢، ص ٢٧٠.

②.....المعجم الكبير، الحديث: ٧٥٢٣، ج ٨، ص ١١١.

साथ हुस्ने सुलूक से पेश आए।” (1)

﴿197﴾.....हज़रते सय्यिदुना अबू शरीह का’बी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ बयान करते हैं कि मैं ने सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को इरशाद फ़रमाते हुवे सुना कि “जो **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता है उसे चाहिये कि हमसाए से अच्छा सुलूक करे।” (2)

﴿198﴾.....हज़रते सय्यिदुना अबू हरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि सय्यिदे अ़ालम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जो **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता है वोह अपने हमसाए को तक्लीफ़ न दे।” (3)

﴿199﴾.....हज़रते सय्यिदुना अबू जुहैफ़ा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि एक शख़्स बारगाहे रिसालत में अपने पड़ोसी की शिकायत ले कर हाज़िर हुवा तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “अपना सामान रास्ते पर डाल दो।” उस ने अपना सामान रास्ते में डाल दिया। लोग वहां से गुज़रते तो उस के पड़ोसी पर ला’नत भेजते। उस ने बारगाहे रिसालत में हाज़िर हो कर अर्ज़ की : “या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ लोग मेरे साथ कैसा बरताव कर रहे हैं?” आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “लोग तुम्हारे

①.....المستدلابى يعلى الموصلى، الحديث: ٣٤٦٥، ج ٣، ص ٢٣٢.

②.....صحيح البخارى، كتاب الادب، باب من كان يومن بالله.....الخ، الحديث: ٦٠١٩، ج ٤، ص ١٠٥.

③.....صحيح البخارى، كتاب الادب، باب من كان يومن بالله.....الخ، الحديث: ٦٠١٨، ج ٤، ص ١٠٥.

साथ कैसा बरताव कर रहे हैं?” अर्ज़ की : “मुझे ला'न ता'न कर रहे हैं।” आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “लोगों से DAHI **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुझ पर ला'नत भेजी।” उस ने अर्ज़ की : “आज के बा'द मैं कभी ऐसा नहीं करूंगा।” चुनान्चे, वोह शख़्स जिस ने बारगाहे रिसालत में शिकायत की थी हाज़िर हुवा तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “अपना सामान उठा लो तुम्हारी तक्लीफ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने दूर फ़रमा दी है।”(1)

﴿200﴾....उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना सलमा रज़ी اللهُ تَعَالَى عَنْهَا बयान करती हैं कि एक दिन मैं और रहमते आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ लिहाफ़ में थे कि हमसाए की बकरी घर में दाख़िल हो गई। जब उस ने रोटी उठाई तो मैं उस की तरफ़ गई और रोटी उस के जबड़े से खींच ली येह देख कर आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “तुझे इस को तक्लीफ़ देना अमान न देगा क्यूंकि येह भी हमसाए को तक्लीफ़ देने से कुछ कम नहीं।”(2)

تمت بالخير والحمد لله رب العالمين



1.....التّرعيب والتّرهيب، كتاب البر والصّلة وغيرها، باب التّرهيب من اذى الحار.....الخ،

الحديث: ٣٩١١، ج ٣، ص ٢٨٧.

2.....جامع العلوم والحكم، الحديث: الخامس عشر، ص ١٧٣.

माخذ و مراجع

مطبوعه	مصنف / مؤلف	کتاب
مکتبه المدینة ۱۴۳۰ھ	کلام باری تعالیٰ	قرآن مجید
مکتبه المدینة ۱۴۳۰ھ	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۱۳۴۰ھ	ترجمہ قرآن کنزالایمان
	علامہ اسماعیل حقی بروسوی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۱۱۳۷ھ	تفسیر روح البیان
دار الفکر بیروت ۱۴۱۹ھ	ابو عبداللہ محمد بن احمد انصاری قرطبی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۶۷۱ھ	تفسیر قرطبی
دار الفکر بیروت ۱۴۰۳ھ	امام جلال الدین سیوطی شافعی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۹۱۱ھ	تفسیر الدر المنثور
دار الکتب العلمیہ ۱۴۱۹ھ	امام محمد بن اسماعیل بخاری رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۲۵۶ھ	صحیح البخاری
دار ابن حزم بیروت ۱۴۱۹ھ	امام مسلم بن حجاج نیشاپوری رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۲۶۱ھ	صحیح مسلم
دار الفکر بیروت ۱۴۱۴ھ	امام محمد بن عیسیٰ ترمذی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۲۷۹ھ	سنن الترمذی
دار احیاء التراث ۱۴۲۱ھ	امام ابوداؤد سلیمان بن اشعث سجستانی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۲۷۵ھ	سنن أبی داود
دار المعرفہ ۱۴۲۰ھ	امام محمد بن یزید قزوینی ابن ماجہ رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۲۷۳ھ	سنن ابن ماجہ
دار الفکر بیروت ۱۴۱۴ھ	امام احمد بن حنبل رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۲۴۱ھ	المسند
دار الفکر بیروت ۱۴۲۶ھ	امام احمد بن حنبل رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۲۴۱ھ	الزهد
دار الکتب العلمیہ ۱۴۲۱ھ	امام ابو بکر عبد الرزاق بن ہمام رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۲۱۱ھ	المصنف
دار الفکر بیروت ۱۴۱۴ھ	امام عبداللہ بن محمد ابی شیبہ رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۲۳۵ھ	المصنف
دار المعرفہ بیروت	امام ابوداؤد سلیمان بن اشعث سجستانی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۲۷۵ھ	مسند ابی داؤد طیالسی
دار الکتب العلمیہ ۱۴۱۸ھ	شیخ الاسلام ابو یعلیٰ احمد موصلی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۳۰۷ھ	مسند ابی یعلیٰ
دار احیاء التراث ۱۴۲۲ھ	حافظ سلیمان بن احمد طبرانی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۳۲۰ھ	المعجم الکبیر
دار الکتب العلمیہ ۱۴۲۰ھ	حافظ سلیمان بن احمد طبرانی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۳۲۰ھ	المعجم الاوسط
دار الکتب العلمیہ ۱۴۲۱ھ	حافظ سلیمان بن احمد طبرانی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۳۲۰ھ	کتاب الدعاء
دار الکتب العلمیہ ۱۴۲۳ھ	ابو بکر عبداللہ بن محمد بن ابی دینار رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۲۸۱ھ	الموسوعہ
دار الکتب العلمیہ ۱۴۱۸ھ	امام حافظ ابو نعیم اصفہانی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۴۳۰ھ	حلیۃ الاولیاء
دار الکتب العلمیہ ۱۴۲۱ھ	امام ابو بکر احمد بن حسین بیہقی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۴۵۸ھ	شعب الایمان
دار الکتب العلمیہ ۱۴۲۱ھ	امام ابو بکر احمد بن حسین بیہقی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۴۵۸ھ	المنن الکبریٰ
دار المعرفہ ۱۴۱۸ھ	امام محمد بن عبد اللہ حاکم رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۴۰۵ھ	المستدرک
دار الفکر بیروت ۱۴۲۱ھ	علامہ ولی الدین تبریزی، متوفی ۷۴۲ھ	مشکوٰۃ المصابیح
دار الفکر بیروت ۱۴۱۷ھ	امام زکی الدین منلوی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۶۵۶ھ	الترغیب والترہیب
	امام محمد بن اسماعیل بخاری رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۲۵۶ھ	الادب المفرد
دار الکتب العلمیہ ۱۴۲۴ھ	امام ابو محمد حسین بن مسعود بغوی متوفی ۵۱۶ھ	شرح السنہ
دار الفکر بیروت ۱۴۱۵ھ	امام ابن عساکر رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۵۷۱ھ	تاریخ دمشق
دار الکتب العلمیہ ۱۴۱۹ھ	علامہ علی متقی بن حسام الدین ہندی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۹۷۵ھ	کنز العمال
مکتبہ فیصلیہ مکہ المکرمہ	ابوالفرج عبدالرحمن بن شہاب الدین رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۷۹۵ھ	جامع العلوم والحکم

دارالکتب العلمیہ ۲۰۰۰ء	ابو عمرو یوسف بن عبداللہ بن عبدالبرقرطبی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۴۶۳ھ	الاستذکار
دارالفکر بیروت ۱۴۱۴ھ	امام جلال الدین سیوطی شافعی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۹۱۱ھ	جامع الاحیاء
دارالکتب العلمیہ ۱۴۱۸ھ	امام ابو احمد عبداللہ بن عدی جرجانی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۳۶۵ھ	الکامل فی ضعف الرجال
دارالکتب العلمیہ ۱۴۲۲ھ	علامہ محمد عبد الرءوف مناوی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۱۰۳۱ھ	فیض القدير
دارالفکر بیروت ۱۴۲۰ھ	حافظ نورالدین علی بن ابوبکر ہیشمی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۸۰۷ھ	مصحح الزوائد
دارالکتب العلمیہ ۱۴۲۲ھ	امام حافظ ابو نعیم اصفہانی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۴۳۰ھ	معرفة الصحابة
مکتبہ الرشیدیہ ریاض ۱۴۲۰ھ	ابوالحسن علی بن خلف بن عبداللہ رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۴۴۹ھ	شرح صحیح البخاری
دار ابن حزم ۱۴۲۱ھ	ابو یسر محمد بن احمد بن حماد دولاہی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۳۱۰ھ	الکتبی والاسماء
دارالکتب العلمیہ	ابوبکر عبداللہ بن زبیر حمیدی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۲۱۹ھ	المسند
دارالکتب العلمیہ ۱۴۱۷ھ	علامہ علاؤ الدین علی بن بلہان فارسی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۷۳۹ھ	الاحسان بقریب صحیح ابن حبان
دارالفکر بیروت ۱۴۱۸ھ	أبو شعاع شیروہ بن شہر دار بن شیروہ دہلیسی ہمدانی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۵۰۹ھ	فردوس الاخبار بما توار الخطاب
مکتبہ العلوم والحکم ۱۴۲۴ھ	امام ابوبکر احمد بن عمرو بن عبدالخالق بزا رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۲۹۲ھ	بحر الزخار المعروف بمسند البزار
دار احیاء التراث ۱۴۱۷ھ	ابو الحسن علی بن محمد جزری رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۶۳۰ھ	اسد الغابۃ فی معرفۃ الصحابۃ
دارالفکر بیروت ۱۴۱۸ھ	علامہ بلر الدین ابی محمد محمود بن احمد عینی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۸۵۵ھ	عمدة القاری شرح صحیح البخاری
مکتبہ مشکوٰۃ الاسلامیہ	امام جلال الدین سیوطی شافعی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۹۱۱ھ	تمہید الفرش فی الحصال موجبة لظل العرش

तां रीफ़ और सअ़दत

हज़रते सय्यिदुना इमाम अब्दुल्लाह बिन उमर बैज़ावी
 عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَوَي (मुतवफ़फ़ा 685 हि.) इरशाद फ़रमाते हैं कि “जो
 शख्स **अबुल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की
 फ़रमां बरदारी करता है दुन्या में उस की ता'रीफ़ें होती हैं और
 आख़िरत में सअ़दत मन्दी से सरफ़राज़ होगा ।”

नेक नमाजी बनने के लिये

हर जुमे'रात बा'द नमाजे मगरिब आप के यहां होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में रिजाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिकत फ़रमाइये ❁ सुन्नतों की तरबियत के लिये मदनी क़ाफ़िले में आशिकाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ❁ रोज़ाना जाएजा लेते हुए नेक आ'माल का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के जिम्मेदार को जम्अ करवाने का मा'मूल बना लीजिये।

मेरा मदनी मक्सद : “मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है। اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ” अपनी इस्लाह के लिये “नेक आ'माल” पर अमल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश के लिये “मदनी क़ाफ़िलों” में सफ़र करना है। اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ